❀ श्री राधारमणो जयते

॥ जयगौर ॥

श्री शोभन पदावली

कविवर

श्रीमन्माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदायाचार्य्य पं० श्री शोभन गोस्वामी जी महाराज के पद संग्रह

सम्पादक—

श्री कृष्णदास बाबाजो

प्रकाशक :

'बैजयन्ती' समिति रजिस्टर्ड

३८६ ज्ञान गुदड़ी,

वृन्दावन ।

॥ श्री राधारमणो जयति ॥

* जयगौर *

दो शब्द

महाप्रभु श्रीचैतन्य देव के समय समय पर प्रकटित सिद्धान्तों का तात्त्विक सङ्कलन कर वैष्णव जनों के सन्मुख समन्वयात्मक सुन्दर सत्-साहित्य के रूप में रखने का भार विश्व-वैष्णव-राजसभा के प्रमुख सभाजन श्रीसनातनगोस्वामी, श्रीरूपगोस्वामी पाद द्वारा अपने तात्कालिक सहयोगी भारतीय दाक्षिण्योत्तर संस्कृति के अन्यतम आचार्य श्रीगोपाल-भट्ट गोस्वामीपाद को अर्पित किया गया था।

अपने प्रिय-जनों के आदेश एवं श्री चैतन्य-देव द्वारा दक्षिणयात्रा में दिये गये उपदेशों को दृष्टिकोण में रखते हुए श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी पाद ने श्री हरि-भक्ति-विलास नामक पौराणिक वैष्णव-स्मृति, षट्सन्दर्भ नायक वैष्णव-दर्शन का सर्ववादि प्रति-पादित साहित्य का संसृजन किया। सन्यस्त अवस्था में श्री चैतन्य देव का सर्व प्रिय "श्री कृष्णकर्णामृत" रहा है। श्री चैतन्य के हार्द को उनके एकमात्र अनुगत शिष्य ही जान सकते हैं अतः वह रहस्य श्री गोपाल

भट्ट से छिपा न रहा उन्होंने उस पर 'श्रीकृष्णवल्लभा' टीका की रचना की जिसका सौन्दर्य देखते ही बनता है। यही नहीं आज विश्व का वह विभूति मय विग्रह श्री बृन्दावन के उस स्थान पर श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी के प्रेम से शालिग्राम शिला से स्वयं प्रकटित होकर श्रीराधारमण नाम से विराजित है जहाँ श्री कृष्ण के वियोग में वियोगिनी श्री राधा ने "हा नाथ ! रमण ! प्रेष्ठ ! क्वासि क्वासि महाभुज ?" कह कर श्री कृष्ण को उच्च स्वर से पुकारा था।

उन्हीं श्री चैतन्य के प्रेम प्रदर्शित आदर्शवादों को सरल सुन्दर साहित्य के विशद परिमार्जित संस्करण रूप में श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी के प्रमुख शिष्य श्री निवास आचार्य एवं श्री गोपीनाथ दास गोस्वामी ने पूर्व एवं पश्चिमोत्तर भारत में प्रचारित किया यह एक 'ऐतिहासिक सत्य है।'

शिष्य वंशानुगत परम्परा के अन्तर्गत के गोपाल भट्ट परम्परा में श्री प्रियादास (भक्तमाल के व्याख्याकार) श्री मनोहर दास जैसे हिन्दी साहित्य के विशिष्ट विद्वानों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने व्रजभाषा के सांस्कृतिक विकास को ऐसी अपूर्व अनेक निधियाँ दी जिसका आज के समय में मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

संस्कृत साहित्य में श्री बलदेव विद्याभूषण के समकालीन श्री राधा-रमण दास गोस्वामी की श्री मद्भागवत पर "दीपिकादीपनी" व्याख्या एक ऐसी अनुपम देन है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

उसी आचार्य परम्परा में १९१२ वैक्रमीय सम्बत् के लगभग श्री शोभनलाल गोस्वामी का आविर्भाव हुआ था। आरम्भ में आपने अपने गुरु-देव श्री बलदेवलाल गोस्वामी-विद्याभूषण से संस्कृत एवं श्रीदम्पति किशोर गोस्वामी से ब्रज-भाषा साहित्य का अध्ययन किया। सम्बत् १९२८ में अपने प्रमुख सहयोगी श्री सार्व भौम मधुसूदन गोस्वामी एवं श्री राधाचरण गोस्वामी के सहयोग से श्री माध्व गौडेश्वर वैष्णव समाज की संस्थापना की, जिस का मुख्य तम उद्देश्य प्रवचन एवं प्रकाशनों द्वारा माध्व गौडेश्वर वैष्णव सिद्धान्तों का प्रचार करना था।

भारतेन्दु के समकालीन एवं कर्मठ सहयोगी के रूप में आपने अनेक कवित्व मय भावात्मक पद्यों की रचना की। प्रस्तुत संकलन जिसका रचना काल १९३५ विक्रम सं० है जिसमें आलङ्कारिक अनुप्रास उपमेय, उपमान, विभावना, रूपक आदि अङ्गों का बड़ी सुन्दरता से विवेचन किया गया है।

भारतीय भाषा के भव्य भाण्डार को भरने में ब्रजभाषा का कितना योग है यह किसी से छिपा नहीं है। यदि आज भारतीय साहित्य से ब्रजभाषा को हटा दिया जाय तो उसमें वह स्पन्दन नहीं रहेगा जिसके अबलम्ब से वह जीवित है।

ब्रज के समन्वयात्मक साहित्य में संयोग वियोग परक शृंङ्गाररस का विशिष्टस्थान है जिसमें ब्रजाङ्गनायों के विश्व विश्रुत परकीयत्व एवं रागभाव का सुन्दर समावेश है।

इस ग्रन्थ में स्थान स्थान पर उस सरणि का अनुगमन ग्रन्थकारने किया है ।

सौभाग्य से आज इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री शोभनलाल गोस्वामी के भ्रातुस्पुत्र व्याख्यान वाचस्यति, वाणीभूषण, विद्यावारिधि आचार्य श्री विजयकृष्ण गोस्वामी जिन्होंने सुदूर गौहाटि से लेकर पूर्व वंग की राजधानी ढाका तक श्री हरिनाम संकीर्तन के साथ स्थान स्थान पर संकीर्तन समाज की स्थापना की थी कि स्मृति में संस्थापित की वृन्दावन स्थ :—

"वैजयन्ती" नामक संस्था द्वारा इनके एक मात्र पुत्र भारत विख्यात श्री अतुल कृष्ण गोस्वामी "व्रज वैभव" जोकि व्रज-रसपरक कथा के एक मात्र विश्लेषक प्रवक्ता हैं जिनकी भक्ति सकोमल कान्त-पदावली गर्भित वाणी से श्रोता विमुग्ध हो जाते हैं के द्वारा हो रहा है ।

"वैजयन्ती" संस्था का यह सर्व प्रथम प्रकाशन है आशा है विज्ञ वाचक बृन्द विवेक विनम्रबुद्धि से इस भावात्मक संकलन का अनुशीलन करेंगे ।

निवेदक :—

गौर कृष्ण गोस्वामी शास्त्री काव्य पुराण दर्शनतीर्थ

श्री राधा रमण मन्दिर घेरा, बृन्दावन ।

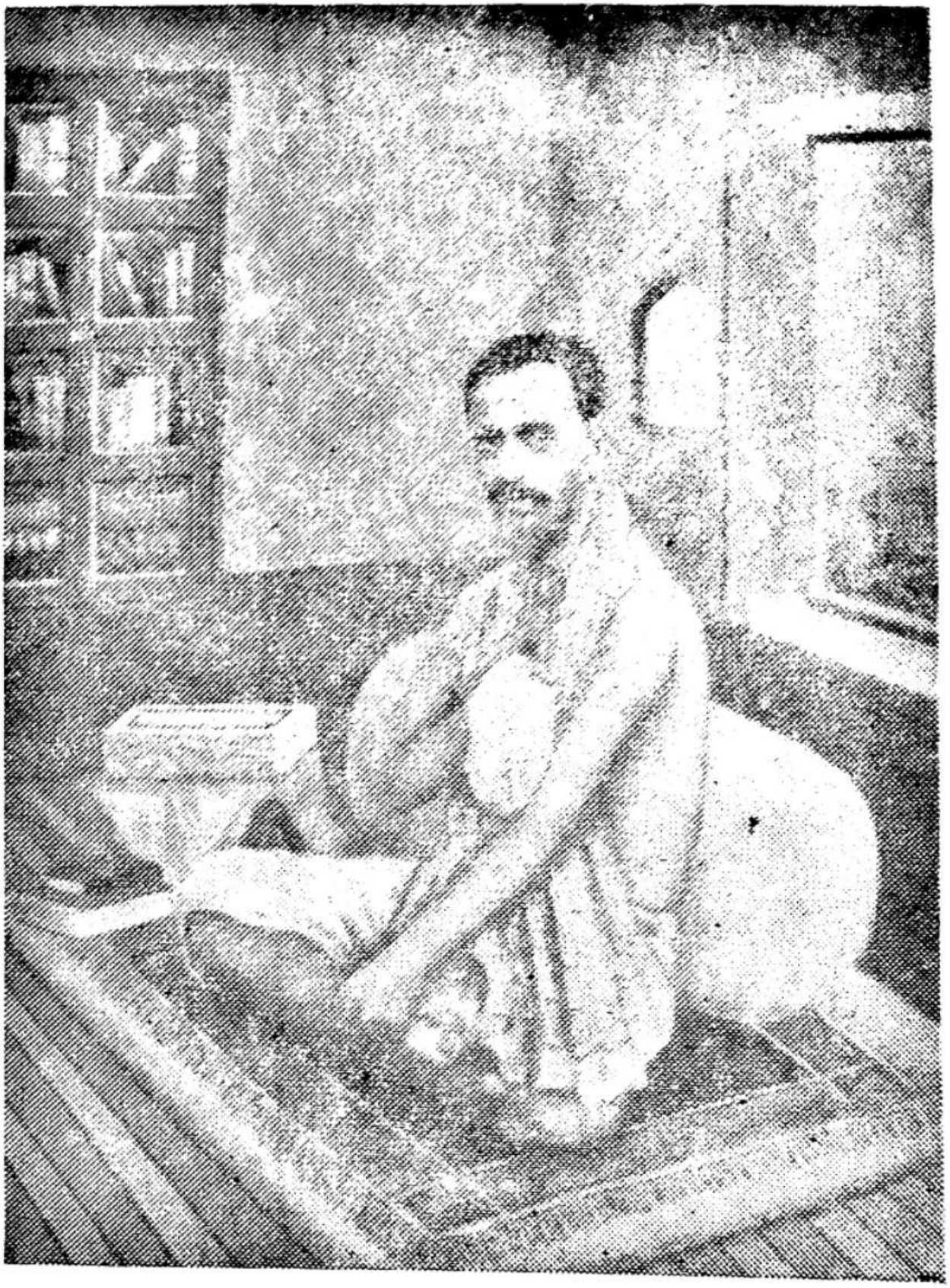

कविवर गोस्वामी श्री शोभनलाल महाराज जी

॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

अथ कविवर शोभन-गोस्वामीकृत कवित्त सवैया इत्यादि का संग्रह—

(राधापद अष्टक)

मल्लिका प्रसूननतें मखमल अतूलनतें,
गालिब शिवार तारहूतें सुखमाके हैं ।
मंजुल मृदुल मणि मानिक मयूखनतें,
माखन मृणाल मालती की उपमाके हैं ॥
शोभन सरसहै सिरीष ओ सरोज हूँ तें,
सुन्दर मनोज हूँ तें सदन सुधा के हैं।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं। १॥
प्रापक प्रवीनन को पुण्य पद पापन के,
घालक फरात जग पुण्य के पताके हैं।
ताके जिन एक वार निजचखकोरन तें,
भव दुःख औरन ते आनि पुनि झाके हैं।
शोभन भनत द्योत शशि की प्रभा के पुंज,
भव दुःख हारिवे को औषध सुधाके हैं।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल,
उज्बल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं ॥२॥
रतन जटित चारु चामीकर नूपुर के,
नीके नलिनीके कल कंकण अदां के हैं।
जावक तें अंकित विराजमान वृंदावन,
सुख के सरोज रोज राजत रमा के हैं।

शोभन भनत वृषभानु की सुता के एसे ,
शोभा औ सुहाग भाग दायक उमा के हैं ।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल ,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं ॥२॥
चिन्हित सरोज यव स्वस्तिक लतातें और
मृदु अति चारु चार चिन्ह कलशाके हैं ।
सोहत प्रसून रथ वेदी वर वालध्वज ,
कङ्कण सु आतपत्र परम प्रभाके हैं ।
शोभन भनत कम्बु मीन से प्रवीन अति ,
चक्रित चमक जहाँ चक्र चपलाके हैं ।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल ,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं ॥४॥
तोषक सुजन-मन तन के सुपोषक हैं ,
शोषक अमित दुःख द्वन्द्व वसुधा के हैं ।
पोषक है मन के मधुप पुंज गुंज मान ,
जोषक प्रभाके पुंज मंजु अति जाके हैं ।
शोभन है कोषक के कर्त्ता स्वभक्तन के ,
रोषक सकल भव भय भ्रमताके हैं ।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल ,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं ॥५॥
तखन महदी दियात दुति दुनी और ,
नखन अमोल मोल जावक जमाके हैं ।
तैसी चारु नग की प्रभाहूँ न समात भौन ,
भामती के भूषण सुहात नवताके हैं ।
शोभन भनत है प्रसिद्धि सिद्धि दायक त्यौं ,
ऋद्धि वृद्धि छायक जे सूर की सुताके हैं ।

कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं ॥६॥
राजत अनौट पग-यान मृदु पाय जेव,
विछिया जराव जरी नेवर झमाके हैं।
पायल नवीन जेव पैंजनी मनी की और,
सोहत छड़ाके जे छमाके मृदुता के हैं।
शोभन भनत चारु चूरण चुरात चित्त,
चुटकी बजात मानो गात गुण जाके हैं।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं ॥७॥
अरुण वरुण नीके शोभत सवास पीके,
झरन मनोरथ गुविंद इंदुताके हैं।
सुभग गुलाल लाल हूँ ते औ गुलाब जाब,
किंसुक पलासनतें दूनी दुति ताके हैं।
शोभन भनत बंधुजीव हू अजीब होत,
विद्रुमन पोत गोत होत लखि ताके हैं।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं ॥८॥
सुंदर सरस अति सरल सुराखे पद,
राधा पद अष्टक बनाय सुखमाके हैं।
संवत निगम राम अंक चंद (१६३४) मित नन्द,
निधि मुनि वसुधा (१७६६) विदित शुभशाके हैं।
शोभन भनत मार्ग सिर सो सुमास पक्ष,
सित तिथि पंचमी सुवार रवि ताके हैं।
कोमल कमलदल हूँ तें निरमल भल,
उज्वल अमल पद पल्लव प्रियाजू के हैं।

इति राधापद अष्टक

अथ वसन्त-विलास

दोहा—श्रीवृंदावन कुंज में श्यामा श्याम विहार।
रहैं सदा षट् ऋतु खड़ी किये सकल शृङ्गार ॥१॥
तिनहूँ में ऋतुराज अति लगत लाड़िली पीय।
तातें सो सम्हरो सदा रहत प्रफुल्लित हीय ॥२॥
ताकौ कछु वर्णन करुँ नवल कुंज में वैस।
ललित लवङ्ग लतान पर छायो रहित विशेस ॥३॥
दर दिवाल तरु माल सब वाल लाल अरु ग्वाल।
नवल रहै व्रज विथि निति गोगण माल तमाल ॥४॥

कवित्त—वृंदावन सघन विराजै ऋतुराज साज,
गुंजित अलिंद अरविंद चय में रहै।
शीतल समीर नित चलत सुगंध मन्द,
मन्द अति मृदुल मनोज ओज कों लहै।
शोभन रसाल माल वौरो लखि कोकिलालि,
कूज कूज मदन महीप जसको कहै।
देत द्रुम दान जोन याचक सुजान मान,
कान्ह राधिका कौ प्रेम भाजन नयो यहै ॥५॥

दोहा—ऋतुपतिने निज करनतें सजी निकुंज वनाय।
जामें श्यामा श्याम नित राजत वरणौं ताय ॥६॥

कवित्त—पीले ही सदन मांहि पीत मीन चौकी पर,
राजत सुपीत चारु चारु सखि वृंद हैं।
प्रीत सों करन माहि पीत हरि आसन लें,
पीत स्वेत किरण दिखात सोअमंद हैं।

पीत ही वसन अरु हसन सुप्रीत भरी ,
पीत जड़े भूषण सुहात सुख कंद हैं।
प्रीत सों सुशोभन विराजे पीत साढ़ी ओढ़ि
गोकुल कुमारी रूप धारी मनु चंद हैं ।।७।।
चपला की चमक चिरात चारुताकों देख
चोखे चारुवेश किये अली ह्वै दिखात है।
चामीकर चिल्कदार चौमुखा चिरागहूँ तें ,
चौगुने चरव झाड़ त्यार वाम हात है।
शोभन भनत चीर चुने चम्पकली चोप,
चौकस चकोर चित्त चंदसी चुरात हैं।
चन्द हरधारें चख कोर से निहारें चंद्र-
मुखी के निहारें ब्रजचन्द गुण गात हैं ।।८।।
ललित वसंत में लगी जो झाड़ पंक्ति तामें,
झावा झलकानहूँ अनूठी सी दिखात है।
दिपत दिवालन पै दूनी त्यौं दिवाल गीर,
शीतल समीर लग कलम हलात है।
शोभन सुहात गोल गोलन सुपांति घनी,
लम्प की लुनाई सो तो मनीसी दिखात है।
लता सुघराई मोपै जातहूँ न गाई जाकी,
मृदु हरताई में दिखात फूल पात है ।।९।।
ताके मांहि राधिका रमण लाल प्यारी वाल,
साथ ले विराजें तिहिंकाल अभिराम है।
वेश सुखधाम श्याम कौन कवि गाय सकै,
लाजत लावण्यता कौं देखि कोटि काम है।
नखसों सुशिखलैं संभार बार बार किये,
सकल सिंगार रिझिवार सवें वाम है।

शोभन अनूप रूप कहालों वखान करौं,
गिरा है अनैन नैंन शोभा के ये धाम है ॥१०॥
आगे लगौ चमन चितौन कों चुरात जासु,
चारुता चखता की चमक चांदनी सी है।
तैसी ही दिखात पीत ललित बनात बिछै,
अछी मसनन्द तापै खीम खाप खासी है।
शोभन सुभाँत जामें धरे अवदान और,
पाकदान पीकदान अतर सुवासी है।
शभैदान लत्तदान विविध कटोर दान,
तैसी ही चंगेल सान करत प्रकासी है ॥ ११॥
कनक कटहरा चहूँ फेरा लगे तासु शीस-
फूल औ फनूस हूँ की पांती कांति तैसी है।
फटकमनीसी झूम झमके कलस जामें,
रुचिर अवेजा की लड़ी हूँ लगी वैसी है।
शोभन भनत तानें बीच बीच जालीन के,
गोला सों दिखात मानों उडुगण दुती सी है।
लागत अमी सी दुति दिपत शशीसी बीच,
हार की कनीसी चारु चारु धरी शीसी है ॥१२॥
साज ऋतुराज को मैं कहा आज गान करूँ,
देखि जन जाको भूल जाय चतुराई है।
लगे है विचित्र चित्र दर्पण अनेक भाँति,
डालन की पांति में दिखात सुघराई है।
शोभन सुन्हैरी औरु पैरी झार झालर की,
झलक झरोखा भानु प्रभा से सुहाई है।
हांड़ी की हलन होलैं बजन वियार लाग,
थाली की सम्हार शोभा कछु एक गाई है ॥१३॥

सवैया

आयो लखौ ऋतुराज नवै नव साज समाज सखी मिलिकैं ।
संग लीनी नवीन प्रियाजू नवैद्युति मानिक मोतिन की झलकैं ।
दमकें कण कङ्कण काम भरी बिथुरी लटकें मुहयैं अलकैं ।
कवि शोभन श्याम सनेह भरी सिगरी सवरी बन में किलकैं ॥१२॥

कवित्त—शीतल समीर धीर लागतो शरीर जोपै,
होयकें अधीर वेग मेरी ओर धावते ।
पल्लव गिरति लखि कैसे मोहि भूल जाते,
देख कैं रसाल वौर विलमन लगाते ।
शोभन भनत भौंर भीर कोकिलालि लखि,
आली वनमाली आय माल को सजावते ।
तातै मोहि जानी परै औरें देश औरें ऋतु
होतो ऋतुईश तो हमारे ईश आवते ॥१५॥

नये जे प्रसून तेई भये मृदु वेश वस्त्र,
वृक्षन के छाल से शरीर को सजाये हैं ।
पल्लव ललित सोई देह की अनूप छवि,
मधुर मयूर पिक शृंग से वजाये हैं ।
शोभन भनत भीर भौंरन की संग सोई,
सेवक वनाये पीत भसम रमाये हैं ।
वनिकें वसंत आज जोगी को स्वरूप कान्त
विना प्राण भीख की अनीति कर धाये हैं ॥१३॥

सवैया

नव पल्लव वागन और भये सखि भोर भये प्रिय जान चहैं ।
कल कोकिल भौंरन गुंज छये शुक तूनी अनोखी ही बात चहैं ।

मृदु फूले प्रसून मनोज के बाण कमान चढे जिय मारे चहैं।
कवि शोभन क्यों न कहौ उन से तन से अब प्राण पयान चहैं ॥१७॥

क० –वेलिन नवेलिन में विपिन बिहारिन में,
वृंदावन वीथिन विलोकि वगरंत हैं।
वादल विमान वाम वालन वितानन में,
वेश नव वाजन में विविध छयंत हैं।
शोभन भनत सव गलीन बिछौनन में,
विपिन वागन में सु कुसुम धरंत हैं।
विजन वयारन में विमल वजारन में,
विधु वननालन में राजत वसंत हैं ॥१८॥

फूलन में फलन में कलीन में फनूसन में,
फूली फुलवारीन में फैलत फलन्त है।
दर में दिवारन में देहली दुलानन में,
दल में दुलीचन में द्रुमन दिपन्त है।
तल में तमालन में तूलन तमोलन में,
तालन तरंगन में तरल तरन्त है।
शोभन है वालन में मालन में जालन में,
वाग वन वीथिन में विखरथो वसन्त है॥१९॥

अम्ब नव वोरेंगे कदम्ब वन झोरेंगे जु,
पात द्रुम छोरेंगे प्रताप पल चार में।
किंशुकन घोरेंगे गुलाल लाल जोरेंगे सु,
नारी नर वोरेंगे खिलार रंग धार में।
सुंदर कुशुम्भ औ अनार कचनार चारु,
शोभन पलास त्रास मोतन मझार में।
कोकिलाहू बोलैंगे सुभौर भीर डोलेंगे सु,
फूल फूल फैलत वसंत की वहार में ॥२०॥

दोहा—आयो छायो है प्रिये नवल आज ऋतुराज ।
चलिये नव कुंजन सघन वृंदावन मिलि आज ॥२१॥
क०—भाँति मद कोकिल कुकाती या वसंत माहि,
गाती गुण पाती कीर स्वाती और चातकी ।
मधुपन पुंज गुंज कुंज कुंज होत अति ,
राजत प्रसून छवि छाजत प्रभात की ।
शोभन भनत मोर शोर भोर रैंन मैंन ,
सेन साज राज आज करत सुभात की ।
एसे में नवेली वाल सुंदर रतन माल ,
लाल श्री गुपाल गल डाल निज हात की ॥२२॥
दोहा—भलौ चलौ सखि जाँये वृन्दावन सुख अैन ।
नव प्रसून पल्लव नवल लखि लीजै सुख नैन ॥२३॥
क०—बैठो वन वाग नव नाय दरबार आय ,
मार महाराज कौ समाज आज देखै पल ।
केकी कीर कोकिलन कीव कल कुँक कुँक
कीरत प्रकास तासु करत विकास भल ।
शोभन भनत मृदु पल्लव प्रसून नव ,
कागज भये है सो सुनामें अलि गुंज फल ।
ऐसी सरसंत सव अति ही लसंत मत ,
बनो है वसंत त्यों वजीर नाय देखै चल ॥२४॥
अरुण पलासनके नीके त्यों वितान तने,
फरस विछान मान पल्लव झरन है ।
नव नव अंकुर निकारिके बने है दीप ,
नवल प्रसून स्वेत झालर वरन है ।
शोभन भनत औ पराग छिरकाव भूमि,
चटक गुलाव चोवदार की करन है ।

एसी ऋतुराज आज करी है तयारी साज,
आमन सो जान ऋतुराज के चरण है ॥२५॥

सवैया—

नव कुंज में पुंज प्रसूनन पै अलि गुंजन होत है रोज ही की।
शुक सारिका कोकिल मोरनि की धुन मारत धीरज ओज ही की॥
कवि शोभन बागन आ गहजी आवदूनी उठे झर चोज ही की।
या बसंत कंत विना दुःख देत है नाज है मौज मनोज ही की॥२६॥

लखिये ऋतुराज के साज सखी निज अंग में कंज उरोजहि की।
कर पल्लव अंबु के पल्लव त्यौं अंगुलि छवि वोर के खोजहि की।
कवि शोभन केशर अंग की रंग लसे पिक बोलत चोज ही की।
दृग फूले सरोज से रोज रहै यह नोज है मौज मनोज ही की॥२७॥

(राधिकारमनजनमोत्सव)

क०—स्वजन चकोरन की पूरन करन आस,
परम प्रकाश रास ब्रजै लखि सूनौ सो।
माधव सुमास शुक्ल पक्ष तिथी पूनो अंक
खेटशर भू मण्डल सम्वत अननों सौ।
भक्त श्रीगोपाल भट्ट प्रीति सों प्रकट रुप,
राधिका रमण नाम छाजे जग दूनों सौ।
ऊनीन विनोद मोद उमगे स साध अति,
श्रीवृंदाविपिन माँहि शोभन सलूनों सौ॥१॥

मंद मुसक्यान में विकान अनमोल बोल,
अमृत अमोल ब्रज वनिता सतून सो।
छायो वन मंगल मुदित मनो जीव जन्तु
अंत ना आनंद कंद चंद जिमि पूनो सौ।

याचक अनेक देत सुखद वधाई आई ,
लेने श्रीगोपाल भट्टजी से दान दूनो सौ।
सूनो सो न लगे कछु ग्राम पुर आदि सब,
शोभन प्रकास सुख सागर न ऊनो सौ ॥२॥
परम स्वरूप मान रूयान भौ जहाँन बीच,
अति सै कृपाल द्याल दीन दुखी जन को।
भक्तन को जीवन सजीवन प्रकास वृंद ,
आश्रित चकोरन कौ चंद चारु तन कौ।
मही पै प्रकास ब्रजराज सुत बर कीन ,
स्वजन गोपाल भट्ट पालो हेत प्रण कौ।
कल को विदारी गुण ग्राम अंक धारी सिरी,
राधिका रमण लाल भूषण विपिन कौ ॥३॥
सरस सुधाई गुण बृन्द की बड़ाई जासु ,
कापै कहि आई रूप माधुरी कथन की।
दीनन की दौर गौर रसिक सु मीनन की,
पीन सिर मोर पिच्छ राजत सुमन की।
जीवन सुजान प्रान श्रीगोपाल भट्टजू के,
महिमा अघट जासु विदित सुपन की ।
पागी भई प्रीत रीत नीत अनुरागी भई,
दुनी भई जग में लुनाई वृंदावन की ॥४॥
अति उतसाह भरे करें अवसेक सब ,
प्रीत सौ गुसाई आस पूरी भई मन की।
वाजत अनेक वाद्य खोल करताल ताल,
मुरज मधुर धुनि छाई अति घन की।
शोभन कवि गावत अनेक गुणी मोद युत,
पाय परतोस कोस भूषण सुधन की ।

छायो जग मंगल अमंगल लुकाय गयौ ,
कीरत उछाह भयो वृंदा के विपिन की ॥५॥

दोहा—जै जै श्रीवृंदाविपिन सदा आनंद अथोर ।
जिहिं मधि श्रीराधारमण लखि नाचत मन मोर ॥६॥

यह पंचक प्रभु जनम को मन को मंगल देन ।
जो गावे और सुनै नित तासु होत सुख चैन ॥७॥

यथा बुद्धि वर्णन कियो संत जनन के हेत ।
प्रभु गुण गण को निरखि कै जो नित सुख को लेत॥८॥

इति श्रीराधिकारमण-जन्मोत्सव-

समाप्तम ॥

कवित्त—भीषण गभीर वीर जीर करै डालै जीव,
भवन समीर नीर भीर हूँ तपात है ।
खस की समीर औ गुलाव आव वोर चीर
धारे तन तोऊ आन तीर सी लगात है ।
शोभन भनत हीर भूषण हूँ पीर देत ,
तीर भानुजू को नैन ताको नाहि जात है ।
कीर है अधीर टीर टीर करें सोर विन,
क्षीर तजि सावक अहीर हूँ दुखात है ॥१॥

छिरन के जन्त्रन गुलावन के नीर और ,
शीतल समीर जहाँ वहै सुख दायक है ।
खासे खस खाने नित रहत सुताने मंजु,
गावत गुमाने राग सारंग सुहाई है ।
शोभन भनत वृषभानु नन्दिनी औ नंद-
नदन आनंद कंद शोभा सरसाई है ।

ग्रीषम गवारी सी बुहारी देत छार ठाढ़ी,
पावस सखीन संग सावस सी पाई है ॥२॥
चंदन चहल चारु चोखे चहुँ ओर भरे,
चंदन चिरागन की चमक चुनी रहैं।
चंदन के चीर औ बियार चलें चंदन की,
चामीकर जंत्रन में चंदन के नीर हैं।
शोभन भनत चंद चांदनी हूँ चंदन की,
चंदन की चौकी चौक चंदन बनीरहैं।
चंदमुखी चंदन की चम्पमाल चम्पकली,
चंदन के चूर पूर ग्रीषम सनी रहैं ॥३॥
चंदनी बने है बृषभानुनंदिनी के चीर,
चंदनी चुरी सो कर चोखी चर चाकी है।
चंदन के चंद मुखी चामर दुरात यौन,
चौक न चमाक चित्त चंदन अदां की है।
शोभन भनत चारखाने चंदनी ही बिछी,
चंदन चलत जन्त्र बीजन जमा की है।
चंदन की चौकी बिछी चंदन के चौक माँहि
चंदनी चरन चारु चारु चपला की है ॥४॥
चंदन चंदोआ अरु चांदनी है चंदन की,
चंदन की चौखट चहुँ ध्यों लगी चोखी है।
चंदन की गिलम गलीचा बिछे चंदन के,
चंदन चारव गंध मन्द मन्द पोखी है।
शोभन भनत चंदनी ही बहु भूषण हैं,
चंदन की चम्पक चमेली चारु शोखी है।
चंदन सदन माहिं राजत है चंदमुखी,
संग ब्रजचंद जू की शोभा सो अनोखी है ॥५॥

मुदित उदित हास रूप रास सखी पास,
ठड़ी है सुवास नीर जंत्रन में छाजे हैं।
शोभन कपूर चूर सुगंधि गुलाब पूर,
महक समीर धार दूर दूर भाजे हैं।
सुंदर मनीन के नवीन मोर पाखन के,
नीके केतकी के कर भूषण सुसाजे हैं।
रायवेल रावटी में नवल वधूटी साथ,
राधिकारमण आज सुख सों विराजे हैं ॥६॥
देख ऋतु ग्रीषम सखीन सजी कुँज नव,
नवल सरोज खोज सेज पैं बिछाये हैं।
वेलारु बिमल चंद बगली बिछौना और,
गेंदुआ गुलाबन के गलीचन सुहाये हैं।
शोभन भनत सेवती के सरवत स्वच्छ,
सुन्दर नवीन सब सोंजन धराये हैं।
भोजन करन हेत मनके हरण हार,
राधिकारमण जू के भवन बनाये हैं ॥७॥
खासे खसखाने ओते खाने खूब खसके हैं,
खस के मिमाने खेंच चोवन में ताने हैं।
खस के किवार खस टाटी लाग जात व्यार,
खस के मझार दोऊ खेलत सिहाने हैं।
खस के बने हैं खूब खरकी झरोका मंजु,
खस के फुहारन में नीर सरसाने हैं।
शोभन भनत खस खांसी रंगे चीर सखी,
पेंन कें ढुरा में चौर खस के सुहाने हैं ॥८॥
मंजुल गुलाबन के गेंदुआ बिछौना और,
गादी है गलीचा गेंद गीलम गुलाब के।

भूषन वसन चारु अमन गुलाबन के,
भाजन भरे हैं नीर शीतल गुलाब के।
शोभन मनत मेघमाल सी गुलाबन की,
छाजत गुलाब के भाजत गुलाबन के।
दाब के न जहाँ जाय सकें परमाणु एक,
रचे जहाँ आलीगण पलँग गुलाब के ॥९॥

सवैया

चंदन के मन रंजन श्याम और अम्बर कौं शुभ द्योज चुनाइये।
खासे तै खानेन में खसके पुन खाने बनाय वितान तनाइये ॥
शोभन वीजन ब्यार करौ जल जन्त्र चलाय विलास मनाइये।
पालासी सेज विछाय निकुंज में प्रीपममें प्यारे हिमंत बनाइये॥१०॥

भानुसुता के समीप लतान में प्राण प्रिये चलि चाव सो आइये।
सीतल मंद समीर सरोज-सुगंध अमंद अनंद मनाइये ॥
शोभन आय गुलाबन में पटघोर भला तन ताप नसाइये।
जल जंत्र चलाय सुजाइके तामें प्रोपममें प्यारी हिमंत मनाइये ॥११

क०—गिलम गुलाब की गलीचा त्यों गुलाबन के,
गादिन गुलाबन पें गेंदुआ गुलाब के।
गजरे गुलाब त्यों जू गुलीवंद गुलाब के,
गोखरू गुलाब गल गहने गुलाब के।
शोभन मनत गज गौनी सी गुलाबनन,
गहरे वसन वेस पहरे गुलाब के।
वाटिका गुलाब की में चलत गुलाबजल-
जंत्रन गुलाब पौन वीजन गुलाब के ॥१२॥

मंदिर गुलाब के गुलाबन की गौख बीच,
छूटत फुहारे भूरे गुलाब के जल के।

गोरी गज गौनी त्यों गुलाबन के चीर चारु,
पहने गुलाबी बने गहने सु हलके ।
शोभन भनत श्यामा श्याम गह मीन माँझ
एक सेज राजै साजी त्यों गुलाब दल के ।
बिजन गुलाब के सखीगण गुलाबी पौन,
झालत धरे अतरसु गुलाब झलके ॥१३॥

सवैया

गुल फूले गुलाब के बागन तें सखी लाय निकुंज बनावत है ।
मल गादी गुलाब बिछायत हाँ गुल गेंदुआ तल्प सजावत है ॥
जल जन्त्र गुलाब के आवनतें भर चीस गुलाब ढुरावत है ।
कवि शोभन नंद किशोर लली बृषभानु कौं लाड़ लढ़ावत है॥१४॥

क०—फूलन के फरस औ फनूस लगे फूलन के,
गादी गिलम फूलन साजत बिजन है ।
बैठक बितान फूल बँगला बनो है फूल,
अतर गुलाब फूल सौरभ करन है ॥
शोभन भनत सेज फूलन बिछाय और,
फल फूल श्यामा श्याम फूले से बदन है ।
फूलके गुलाब पास फूल कीक करें हाम,
फूल के पानदान फूलौ सो चमन है ॥१५॥
चम्पक की चौखट किवार केतकी के चारु ,
देहली दुपैरिया की राजत सुलभ है ।
लसें चौक में चमेली फूल दाखन के अरु,
खम्भ है खीरनी तथा राजत विमल है ॥
शोभन भनत मोतियन की मणोल छात-
जुई की गुलाब गौंख कन्नस कमल है ।
रायबेल रावटी त्यों कलसा कुंद कदम्ब-
न के कँगूरे बने कुंजन में बिजल है ॥१६॥

(अथपावस)

दांय दांय दामिनी दिशान दिपे देखि देखि
दुखिया दुखित देहिदुनी दुख पाय पाय ।
छाय छाय छाजत छवीली छित छातन पे
छाजन छतान तान छवि सो सु गाय गाय ।
सांय सांय शोभन समीर चलें सोय सोय
सांई सुव लूटत सयानी लिपिटाय टाय ।
झाँय झाँय झरना झमाक झरे झूम झूम
झरत घटान सें झरी हूँ झमकाय काय ॥१॥

पिऊ पिऊ करकै पपैया जिय काढ़ि लेत
चैन छिन देति नाय पापी पिक गाने सैं ॥
मोर सोर घन घोर मन को मरगे अति
जोर जोर दादुर विजावें बोल ताने सैं ।
शोभन सघन घन तन कौं तपावें मन
गांस पड़ जावे अति चपला दिखाने से ।
... ...
... ... ॥२॥

दो०--पावस आई परम प्रिय पंचिन प्राणन मूल ।
पीऊ पपैया पिक सुखिर बोलत जामन कूल ॥३॥

तामें प्यारी अति मुदित सखिन संगवन और ।
निरखै सघन घटान कौं गहवर वन की ओर ॥४॥

क०--करि वर गर्जन गइन दान चहुँ ओर
छमकति जमीन कौ झरीन के झमाके सैं ।
धरन परन कीसी दूर सै फवी है बर
शोभन भरे है जल जंगल झमाके सैं ।

मग हूँ पतन होय झाई देति रविधूप
नाल साई ससि सर वर सहगा के सैं।
... ...
... ... ॥५॥

दुय माल ग्वाल वाल संग में सुहाये और
वन वेली गौधन सघन सरसाई है ॥
चित्र जे बिचित्र फूल फूल रहे डालन पै
सोई सिर मुकुट लकुट दरसाई है ।
दामिनी दमक पीत मंजुल दुकूल सोहै
मोहै वक-पांति मोतीमालसी सुहाई है।
शोभन गरज सोई वजै वेणु वार वार
पावस वजो है आज रावरौ कन्हाई है ॥६॥

पावस सुहाई सरसाई वरसाय नीर
शीतल समीर धीर वैठे द्रुम तुंगरु।
शोभन घनन की सुवन में गुजार चारु
सुनके पुकार करैं चारु चारु सिंगरू।
गहन पघन नहीं सहन रहन होत
कवहुँक वन वीच जंतुन के जंगरू।
ऐसे में वियाली देत ताली गोप वाली नाचै
मंजु मंजु वाजत गुपाल पाय घूघरू ॥७॥

मेघ मुरवान सौं घूक की टारन और
अम्बर ठठान आन फूटत फटान की।
पिक की रटान चारु चात्रिक चुटान तान
गावत सुठान कीर सरकपटान की ।
त्रिण तरु वान नद नदों उघटान मंजु
जंगल सुहान कवि शोभन वटान की।

साज दुपटान लाग पिय के पटान बूँद
भीजत अटान छवि देखत घटान की ॥८॥
झूम झूम रुम रुम घुम घुम घिर घिर
घुमड़ घुमड़ घटा आई सरसाई है ।
दामिनी दिपात दीप दुति हूँ लजात और
गरज सुहात मानौं गाँवत वधाई है ।
घड़ी घड़ी झड़ी की लड़ीसी पड़े भूमि माझ
धूमसी पड़ी है हरि धनुष धुआई है ।
शोभन निकाई वरषा की दरसाई अति
सुमत कन्हाई प्रिया राजत सिहाई है ॥९॥

दो०--सघन घटा लखि अटा पर चली विहँस नव बाल ।
नंदलाल को संग लिये मनु चपला घन माल ॥१०॥
मनि मन्दिर में मुदित दोउ बैठे जहाँ सिहाय ।
जलज माल कौ सुख निरखि सखी कहत छवि गाय
॥११॥

क०--मानिक कौ मंदिर जो सुंदर बनौ है अति
मूँगा भर गोल गोल मृदुल सुहाई है ।
लालन के खम्भ मंजु मंजु चित्त चोरें बने
दास जड़े चुन्निन सों शोभा सरसाई है ।
छात छात छज्जे सजे शोभन सु हीरन सौं
भीत सुजड़ित नीलमणि प्रभा छाई है ।
तहाँ बैठी नवल किशोरी गोरी लाल बाल
माल चहुँ ओर घोर घटा की दिखाई है ॥१२॥

दो०--करत हास परिहास अति सहचरि परम प्रवीन ।
छकि छकि रूप अनूप लखि कवुक बजावत बीन ॥१३

सो०--मंद हास करि लाल वालहि अङ्क लगाय पुनि।
करत अटपटे ख्याल पावस में अति मुदित है ॥१४॥

क०--भारी यह प्यारी है डरारी ऋतु पावस की
ढकी चारु चंद्रमा की चांदनी सुगहरी ।
शीतल पवन और शोभन सुगंध उठै
तैसी चारु चारु पेख भानुजा की लहरी।
नर नारि सवन मनोज ओज बाढ्यौ अति
सवै सेज तरुणी विछाई जाय कहरी।
चली कित जात घन श्याम सौं मिलाओ गात
रात दिन प्रात अधरात और दुपहरी ॥१५॥

सवैया--

गोरी किशोरी लखौ नभ नैक अनेक पयोद समूहन घेरो ।
इंद्र वधूटी फिरें वहु भूमि झलन पल्लव वेलिन हेरो ।
चातक कौञ्च चकोरन की धुनि मानों मनोजन की व सफेरो।
कीजिये देर न प्यारी इही छिन तल्प पै आय करौ हित मेरौ ॥१६

सुंदरता की तुहि परिमान समानन आन लखि तव हेलि ।
रम्भा रमा शचि काम वधू और शैलसुता दुति पायन पेली ।
को रमनी रमनीय लगै पुनि राधिका के तो सम माहिन वेलि।
ताते कृपा कर अपनी जान करौ ममप्राण प्रिये मृदु केलि ॥१७॥

मृग लोचनि तोषव अंग अनंग यरंग वशीकर हेरे ।
नेह संकोच सने मृदु शोभन मोमन मीन तशकर चेरे ।
कम्पत गात घटा घहरात चढ़ाय के भौंह क्यों लोचन फेरे।
मो कर कंज धरौं हित सों उर ओर कपोल कपोलन मेरे ॥१८॥

माधवीं कुंज में गुंजत भौर अलीगण पुंजन कोई सहेली ।
कुंज प्रसून के पातन की अती नीकी मनीन की तला नवेली।

चातुरी मेरी निहारौ अहो किमि शोभन राखी वनाय कै वेली।
हेली अकेली हीं आज चलौ भली कैसी वछू इक कीजिये केली॥१९

दो०--हँसि गहि प्यारी कुंज कर चले युगल रस खान।
आन कह्यौ कछु कान सौं सखि एक चतुर सुजान॥२०॥
लिये जात तुम कौन या कुंज माहि पिय धाय।
लाल तहाँ नव वाल इक करि सिंगार को जाय॥२१॥
तव प्यारी पूछन लगी प्यारे सों हँसि मंद।
रसिकलाल कछु चकित ह्वै नैन गह्यौं रसकंद॥२२॥
प्यारी तव कछु क्रोध करि पूछी सखी वुलाय।
सभी वृत्त तिन कहि दियो राधे जू ढ़िग जाय॥२३॥

सो०—सुनत और तिय नाम मान कियो प्यारी विशद।
वैठी है अति वाम लाल विकल है पग परत॥२४॥
प्यारी सनमुख जाय लाल करौ मीनति अमित।
राधा सखी वुलाय दीये विहार करि पदनतै॥२५॥
तवै गये नंदलाल ललिताजू के भवन में।
दे निज मुक्तामाल भेजी प्यारी भवन में॥२६॥
ललिता जू तहाँ जाय के वोलहि सुमृदु वैन।
अहो लाड़िली तुम विना प्यारे कौं नहि चैन॥२७॥
कहत वात सव विविध विध सुन नहि कीजै मान।
विना समझै रिस नहीं करै जे नर चतुर सुजान॥२८॥
अव प्यारी विनती करै जो नहीं तजही मान।
पुन हम तिनको लैन को कवु न जैहो आन॥२९॥

सवैया—

वात कहै कोई जोइ जो आयके सोई सो सांची सी तु न जानती।
जानती नाहें तू कान्ह की प्रीति अनीति की वाम तुह्में अति भावती।

भामती क्यों मृदु मालती वेल कौ छाड़ि है आनंद रूप कलावती ।
लावती आक कली पै अली सुक पाय के कोनसी आनी वतावती
॥३०॥

क०—निशि और वासर तिहारो वनमाली आली
राखै मन ध्यान आन नाहि दरसत है ।
श्रवण नवीन नित तेरौ ही चरित्र सुनैं
तेरौ गरगीलौ रूप ध्यान में धरत है ।
ताकों प्रेम अनते अजान की सी जी में जान
मान ठान कान सौ गुमान में रहति है ।
देखतौ विचार कोउ ऐसौउ गमार जग
नीम की निवौड़ी खात दाख ना चखत है ॥३१॥

सवैया--

तुमें रूप सरूप दियौ तो सही दयी एतो हमारी विचार लेंरी ।
दिना चार की चाँदनी चोखी रहे पुनि रात अंध्यारी निहार लैरी ।
अव मोहन तोपें लट्टू भट्टू कै है शोभन ये उर धार लें री ।
सव होत नहीं दिन एक सखो वह तीन हि हात पखारलें री ॥३२॥

जो पै कही तो सो आय कछू कोउ तो पे करी उनसे तकरारसी ।
लेती वुलाय हमें तो तवै करि ठोक सवे करती हूँ विगारसी ।
शोभन मान तजी तो तजो नहिं जात है देखिये को है सिपारसी ।
वोरी भई मति तेरी अली भली हाथ के कंगन कौं कह आरसी
॥३३॥

वाहर कौं तुमसे विछुरे गति ऐसी भई सो कहा लगि कीजे ।
ध्यान धरौ तुमरौ मन में मेलि प्राण-प्रिया रस रंगन भीजे ।
धारके मोहन समाधि करैं चखवार ते अम्वु की विंदुन छीजे ।
शोभन जू कवहूँ ललके कवहूँ पुलके कवहूँ कंपसीजे ॥३४॥

क०--अति अभिराम श्याम काम तें विकल पल
छिन ना छवीलों छीन आनन कला सो है।
गावति तिहारो जस धावत कवूत इत
लावत कवू न मन और अवलासी है।
नैक ना विचारें चित चंचल तिहारी वात
मन में चढ़ी है वाके तुही चपलासी है।
शोभन तिहारी वलिहारी ले विहारी जू पै
करौ उजियारी रैंन कौतुक कलासी है ॥३५॥
मान को गुमान प्राण प्यारी वलिहारी तजि
सुजस तिहारो रिझवार लाल गात है।
रीति प्रेम प्रीत की न तेरी सम जाने और
वहुत निहोरों कर तोकों समझात है।
पल छिन न तेरौ सखि मोहन वियोग सहै
शोभन उदासी सों तेरो मग चाहत है।
वेग चलौ स्वामिनी सुहावनी विहारी पास
तू तौ इतरात उतरात वीती जात है ॥३६॥
दो०—ललिता वचन सु ललित अति लगे लली मन माहि।
रंचक हँसि अंचल पकरि वोली अली सिहाय ॥३७॥
कछुक मधुर कछु कछु परुख कहन लगी पिय वात
हमसे विन पूछे सखि चले और के जात ॥३८॥
जाते कछु मोको भयो मान गुमान सुजान।
प्राण पीयते है सखी मोकों कछू न वान ॥३९॥
उन विन दिन दूनौ लगै सूनो लगै समाज।
तन मन अति व्याकुल रहै सो कहुँ तुमसों आज ॥४०॥
क०—मंद मंद मनमें उमङ्ग रङ्ग वाढ़ें सुन
गाढ़ै केलि कङ्करी करे जो काढ़ै डालेरी

प्यासी इन प्राणन की पापी पंचवानन की
तानन की कूक हूक पिक की पजारीरी ।
गाजी हरि हातन विराजी छवि छाजी अति
हमते न राजी रोम-राजी को सुजालैरी ।
और नहीं दंसी सौत ध्वंसी करें मोहि आय
विषतें प्रसंशी यह वंसी मोहि सालैंरी ॥४१॥

दो०—अब तुम जाय बुलाय कै लाओ नंद किशोर ।
हम तुम्हरी कोउ बात से चाहत करौ न और ॥४२॥
हम तबलों शृङ्गार कर भौंन माहि अब जाहि ।
बैठ रहैंगी सेज पर लाओ उन्हैं बुलाय ॥४३॥
ललिता तब लेने गई विहसि लाल के पास ।
प्यारी हित निज करन तें करत वेष मृदु हास ॥४४॥

क०—किये है शृङ्गार बार बार सों सम्हार नार
लखति मनोज रति लज्जित हृदे भये ।
भाग भरे भाल पै सुहात खौर चंदन की
शोभा के समूह मुख श्याम बिंदु तै भये ।
हीर की कनीन सौं जड़ित वंदनी सु ताहि
दोउ कर कंजन सों बांधत मुदै भये ।
शोभन सखीन लखि कौतुक सौ मानौ मन
बीस रवि दश शशि संग ही उदै भये ॥४५॥

सवैया—

कर कंजन कंचन कंकण है कुच कुम्भन कंचुकि कामिन के ।
कच कोमल केलि कपोलन पै करै कौन कहै सकै भामिन के ।
कटि किङ्किणी कूजन है कटि में कछु कानन कान्ति सुहामन के ।
कुच कण्ठ पै कम्बु की बाज़ दिये कवि शोभन की रति दामिन के
॥४६॥

क०—रसपति निविड़ पयोद कुल कोकिल सी
केकी कल कण्ठन सी कालिम पटीसी है ।
इंदीवर पुंजन सी उरग वधूजन सी
रवि तनया सी नील नू तन घटी सी है ।
शोभन भनत तम तमक तमोलन सी
विच विच रचित सुनील कजटी सी है ।
चोटी लटकीसी कटितट लपटी सी मनु
पन्नगी पिनाकी पद पूज पलटी सी है ॥४७॥

दो०—लाल आय अति दीन ह्वै करत मीनती धाय ।
जय जय श्री कीरति कुमर जयतु सदा सुखदाय ॥४८॥

सवैया

श्रीवृषमानु कुमारि विसारि दियो, किहि हेतु जु मोहि उबारो ।
श्रीमति ! पास हमें नित राखो हुलास हमें यह प्राण पियारो ।
शोभन भानुसुता तट कुंज में केलि करौं मृदु वेन उचारो ।
निज दासन में मोहि जान सुजान करौ अपनों निज चित्त तें प्यारो
॥ ४९ ॥

दो०—प्यारी हँसी निज दृगन तैं लालन लिये बुलाय ।
दोऊ मिलि करने लगे सुन्दर केलि सिहाय ॥५०॥

क०—सुख को अगार चारु नवल सिंगार अति,
सौरभ विविध रति केलि सुखदात हैं ।
सरस प्रसून सेज रस अति शोभा मानों,
निरखि निरखि अलीगन ना अघात हैं ।
शोभन भनत भानुनन्दिनी समीप कुंज,
होत सुख पुंज गुंज मधुप सिहात हैं ।
करत कपोल मृदु मृदुल कपोल जोर,
झिझकि झिझकि दोउ अंग लपटात है ॥५२॥

दो०—इहि प्रकार वरनन कियो पावस जुगल विलास।
कविजन मन मधुकर सदा सेवों सहित हुलास ॥५३॥

क०—चारु चारु चपला चमाक होत चहुँ ओर
चंद चांदनी की चारुता कों गई चरसा।
धूंय धूंय धरवा धरायै परें घाय घाय,
धार धूम धमक धनुष देत धरसा।
सांय सांय शोभन समीर शोर सोवत में
शेल और शतघ्नी शरोर लगे सरसा।
वाग वाग वादल विराजें वीर विथिन में
विथित वियोगिनी कों आई फेर वरसा ॥५४॥
मेरोमन मुखित मयङ्क मुखी मानें नाहिं
मोहन की मुरति में गाम मोहि परखा।
एती कहै कोमल कपोल धर कर कंज
कामिनी करेजे उठी कामन की धरखा।
शोभन शरीर सब स्वेद है सिथिल भये
स्वास सों सरोज नैंन आँसू आये ढरखा।
व्याकुल पुकार वार वार कहै मैरे प्रान
छार छार करवे कों आई फेर वरखा ॥५५॥
घोर घहरात घन घुमड़ घुमड़ घूम
सघन घटान हरी घामन की तरसा।
चातक चकोर चहुँ ओर चारु चारु चींक
चपला चमाक देख चाव होत सरसा।
शोभन समीर सखो सुनिये सयानी सीख
श्यामा को सुनावो सब करो जिन अरसा।
मोहन सों मान अब की जो ना मयङ्कमुखी
मान मद मारवे को आई फेर वरखा ॥५६॥

रोस कर अधर दवाय के नजर वङ्क
वाला कर कौतुक कछुक बोलो सरसा ।
केलि मनि मन्दिर में वगर वगर धूप
अगर कपूर चूर हमें देत डरसा ।
शोभन भनत कित गयो उन सत्यवाक
आज काल करत लगायो एतो अरसा ।
ऊधो तुम कहियो वुझाय जाय वार वार
षड़ ऋतु वीत अव आई फेर वरसा ॥५७॥

आये घनश्याम घनश्याम हूँ के धाम घिरि
देखों घनश्याम घनश्याम कू वुलाय लै ।
वो हैं निस्काम निस्काम वाम नाहिंन मैं
तू हू निस्काम निसकाम कूँ वटाय लै ।
एहो सुन वीर रतिवीर यदुवीर वीर
वाँके देयक कूवोरी वेग ही लगाय लै ।
देहरी थरथरात देहरी चढ्यों न जात
देहरी तनक हाथ देहरी नघाय लै ॥५८॥

सवैया

दीन अधीन फिरै विन जोवन मीन कुलीन प्रवीन जू हेरो ।
गौगण माल विहाल विना तृण द्याल सरोबर और न हेरो ।
व्याकुल मोरहुं शोर करें करुणानिध याचक वातकहेरो ।
पीर अवै यदुवीर हरो वहु नीर झरीन लगाय के हेरो ॥५९॥
सवै सरिता सर सूख चले अरु हूक चले वन दाव निवेरो ।
भूखे फिरें वहु व्याकुल जीव सुजीवन नाय दयाकर गेरो ।
लूक हू कूक करें निशि वासर शोभन नाय सुहात घनेरो ।
वोर अवै यदुवीर हरो वहु नीर झरोन लगाय के हेरो ॥६०॥

अति कूर कल की मलीनन की करनीजा की देवजू आपन हेरो।
नाम तिहारो कृपा के निकेत है ताते प्रजायें जू प्राणन गेरो।
शोभन आप क्षमा उरधार अपार प्रलापते तार निवेरो।
वीर अवै यदुवीर हरो वहू नीर झरीन लगाय के हेरो ॥६१॥

क०—तरणि तनुजा तीर वीर भीर देखी अति
सुंदर कुसुम्भे चीर चंदमुखी सखी साज।
पन्नीन मनीन के औ हीर की कनीन कें
सुमोतीन लड़ीन कें अभूषण विराजे छाज।
शीतल समीर मेघ नीर पडै धीर कवि
शोभन मल्हार राग गावें करके समाज।
धार शीश ताज लाज त्याज गुरु लोगन की,
भूलि रहे श्यामा श्याम सरस हिंडोरे आज ॥६२॥

सवैया

वरसें घन घोर किशोर बिना वन मोरन शोर मची मनकों।
अब धीर जरा खर होरी सखी किह भाँत भला राखों तनकों।
अति खीन मलीन भयो यह देह वियोग से खीय दयो पनकों।
कर सूकें सें कंकण मेरी गिरो ठहनं ठहनं ठहनं ठनकों ॥६३॥

(अथ साँझी)

चलीं सब मिलि हेली कुसुम चमेली लैंन
मैंन से नवेली रति रूप लखि होत वाँझ।
सुंदर सहेली संग सोहत सुनहरी चीर,
भीर तीर तरणी तनुजा भरो अपाँझ।
करें मृदु केली दुरे कबुक नवेली जाय,
शोभन सनेह भरी भामती विलोक साँझ।
फूल ही वसन पहरें फूल ही की माल गरें,
फूल ही सीं वीनें फूलें फूली फुलवारी माँझ ॥१॥

देखो आज हैली वनवेली वहारन में ,
राधिका नवेली लट लटकैं सुलंक माझ ।
चामीकर चम्पक चमकदार चाँदनी के
चर व सलोने हार राजत सुकंठ माझ ।
शोभन सुगन्धन के पुंज से प्रकाश आस
पास अलि गुंजत अनेक मृदु कुंज माझ ।
मोद मद माती वैन मृदुल से गाती कछु
फूल ही सी वीनैं फूलें फूली फुलवारी माझ ।।२।।
साँझी सजाने हेत लेत सब सखी टेर
करी जिन वेर फेर आली अब होत साँझ ।
वेग ही चलोरी वीर दूर वन वाग जाय
नाहि रहजैहै है पुनि रचना हमारी वाँझ ।
शोभन सयानी घाट वाट हूँ न रहै और
जमुना गभीर भरी कितहूं नहैगी पाँज ।
चली चारु चातुरी से भेटें वृजचन्दै आज
फूल हो सी वीनैं फूलें फूली फुलवारी माझ ।।३।।
भली जे पछेली ते नवेली हेली यैन्ह आज
संग लें सहेली केली खेलन सुवेली माँझ ।
गावत गुमान भरी तान सुरसान धरी
झरी सी लगावें वाजे मुरज सरोज झांझ ।
कोउ देत ताली कोउ आली वनमाली कहै
पूँछे कोउ आली कहाँ गयो दचौस होत साँझ ।
करें वहु ख्याली चित अति खुशहाली भरी
फूल ही सी वीनै फूलें फूली फुलवारी माझ ।।४।।

(अथ सरद के कवित्त)

दो०—आई सरद सरोज कुल प्रफुलित भये नवीन ।
मानो निज प्रिय पायके मुदित भये दुःख छीन ॥१॥
हीरन के सुंदर फरस सरस सेज सरसात ।
रजित बादलन की लगी बगलो विमल सुहात ॥२॥
मुक्ता झालर झिलमिली हलत लगत सुखकंद ।
चमक चांदनी की तहाँ मिल मिलात सुअमंद ॥३॥
तने तास के रास में रुचिर वितान सुतान ।
स्वेत फनूस प्रसून नव स्वेत सकल सुभथान ॥४॥
तहाँ रास को रस भयौ छयो मनोहर साज ।
सो कछु में वर्णन करूँ सुंदर सुखद समाज ॥५॥

क०—आई ऋतु सरद सुहाई विमलाई छाई
छाई नभ भूतल सुतल तल ताल में ।
अलि कुल राजे कुंज कुंजन में गुंज गुंज
पुंज पुंज कुसुम समूहन के जाल में ।
शोभन भनत नव खंजन चकोरन की
नीकी पांति भाँति भाँति सोभित मराल में ।
विधिमुखि स्यालन में गन्धित तमालन में
वालन में राजित विहारी वनमाल में ॥६॥

सवैया—

फूले सरोज सरोवर औज मनोज महीप महाछवि पाई ।
चंद अमंद प्रकाश कि रास विकाश करें मृदु शीतलताई ।
कवि शोभन गुंजत पुंज के पुंज अलीगण कुंजन में सरसाई ।
ऐसी सुहाई न भाई कबू अरु सोई ये सारद आरद आई ॥७॥

क०—सुंदर सुखद स्वच्छ सुभग सुसोभा युत
शीतल सरस सौभ संपुट सुहाई है ।
गुंज गुंज कुंजन में मंजु मंजु केकी अलि
कंजन के पुंज बैठ कीरत सी गाई है ।
शोभन भनत भल उदित सुहोत चंद
किरण अमंद मंद मारुत सो छाई है ।
प्रकट प्रकास रासरस को विलास जहाँ
सरद सुहाग भाग वृंदावन पाई है ॥८॥
रजत की भूमि चहुँ घूम में वनी है मंजु
हीरन को सुभग सिंहासन विराजमान ।
स्वेत स्वेत जरी के वितान त्यों समान तने
सौरभ सौ साने स्वेत वसन विछाने आन ।
शोभन दिपात तेंसे मोतीन की झालर में
मंजुल प्रकास स्वेत झारन में छाजमान ।
राजमान गान ओ सुठाठमान साज सव
नाचमान लाड़िली रसिक लाल झरीमान ॥९॥

(अथ ऋतु हेमन्त लिख्यते)
तत्रादौ हेमंत युगल सम्वादः ।

दो०—जात देख हेमंत में प्यारे कों तीय अन्त ।
अंचल गह चंचल वचन वोली यह दुःखवन्त ॥
क०—आई है हेमन्त ऋतु जामें जोपै जौहो कन्त
तोपै वलवन्त शोत हमकूँ सतावेगो ।
सुख सों छुड़ाय शोक जलधि वुड़ाय हाय
असुअन अन्हाय गात कंप उपजावेगो ।
व्याकुल विछोनन पें पड़ूँगी विछाय ताहूँ
हाय हाय शोचन के छिमिकन भिजावेंगों ।

शोभन भनत सत्य बात मम मानो प्रिय
तुमसौं छुड़ाय धर्मराज पैं पठावेंगो ॥२॥

दो०—धीरज जिय में राखिये यही जान को काल।
आवेंगे हम तुरंत ही ग्रहपति तुम्हरे बाल ॥३॥

क०—ग्रीसम में घाम सें उराय रहजाँय सब
बरसा में कांपे बाट तरषा स ही जात है।
सरद सुखाय नाय जायो जाय आन देश
ताते हेमन्त माय जात हरसात है।
जामें रविधूप हू सुहाय निशि जाय रहें
पथिक सुगेह देख अति सरसात है।
शोभन भनत प्यारो डरौ मत जीय माय
सुख सों बसंत माय आय मिले जात है ॥४॥

दो०—ऋतु हेमन्त किननें कह्यो जान विदेश तुम्हार।
षट ऋतु ग्रह में रहो पिय जरो मरो रुजगार ॥५॥

क०—सुभग पर्य्यंक पै विराजै सब नाथ साथ
विविध शृंगार साज जेती पुर बाला है।
ओढ़ कै दुसाला और कंचुकी बिशाला कंठ
मोती मणि लाला हीर हार हूँ विशाला है।
कंचन अगीठी सों सुमीठो मीठी धूप धूम
उठै मनु काम श्याम रच्यो मोहजाला है।
शोभन भनत इतै उदित मसला जामें
तामें प्राणनाथ मोहि करौ बिनहाला है ॥६॥

दो०—तुमनें हमसें जो कही सो करिहै हम वाम।
अब विदेश नहिं जायगे रहै तुम्हारे धाम ॥७॥

क०—सुनौ प्राणप्रिया हिया माह क्यों डराय जाओ
रहैं गेह माय नाँय जाँय आन देश मा ।
उठो उठो करो जाय विविध शृंगार पाँय
जावक लगाय पैंनों कंकण अमेंठमा ।
उजरे उरोजन पैं कंचुकी सुधार हार
पैनों सुकमार-गात पोंची मृदु हात मा ।
शोभन बनाय वेश आओ मम पास वाम
करें सुख सैन मिलि आज एक सेज मां ॥८॥
दो०—चली भली कँह छलीं सों अली करन शृङ्गार ।
हरष परष कर सखी को सुंदर वार अब नार ॥९॥
क०—चली दामिनी सी गजगामिनी सखीन साथ
नाथ को सिरात बात बात में हँसोसी हैं ।
अति ही आनंद चंदमुखी कें समात नाय
हिया में जिया में बहु कौतुक गसोसी है ।
जोपैं कबु वेग सें उमंग सें चलैं है धाय
तोपैं कटि झीनी होय जात है लचीसी है ।
शोभन भन्त कौंन देख ना लुभाय जाकौं
देखि कैं थकी है रवि शशि की गतीसी है ॥१०॥
दो०—जाय सदन शृंगार में बैठी वसन निकार ।
आभूषण धारत सबै जिय में हरष अपार ॥११॥
सो०—पहर वसन बहु भाँत्रि आभूषण धारे सबै ।
देख मुकर मुसक्यात नयन सरावत आपने ॥१२॥
क०—वारे कजरारे काम कारी सौं सुधारे प्यारे
अति अनियारे तेग बरछी को धार सौं ।
पड़े बाल कारे तिनें देख चौंक बारे भारे
अति ही दुलारे प्राण प्यारे के विचारसौं ।

मद मतवारे झूम रहे अरुनारे मोहे
नायक हूँ सारे खिले फूल जो बनाय सों।
कहाँ मृग मीन कारे खंजन विचारे हारे
शोभन भये है नैंन एसे दिन चार सों ॥१३॥

दो०—केश बने सुंदर मृदुल सहित सनेह सम्हार।
नागन जिम देखत लगें एसे वारह मार ॥१४॥

क०—कारे अनि कोमल किनारे मृणालन हूँ तें
रेसम के तारन सें वारे बहु प्यारे है।
शोभन भनत क्या सुकाम कारीगर महा
कीनो है सो धारे तेल डाल कें सुधारे है।
नागन तें कारे अलिकुल तें सुमेघ तुम
इनहूँ तें कारे छूट एडिन पधारे है।
प्यारे मुखचंद रें विरारे वार वार सारे
एसे वार वार मन मोहत हमारे है ॥१५॥

(श्रीराधा रूप विवेचन)

क०—गुण सौं अगाधा राधा रूप कौं को गाय सकें
थकी जाकों देख रवि शशि की गतिसी है।
सुंदर सुभाव मध्य मुठी में समाय जाकी
बांकी सी चितौन लाल मति हूँ हरीसी है।
जोपे कोउ ताके ही समान सुधा मान करे
तोपे सो अजान निज भूल गो मतीसी है।
शोभन भनत वृषभान की सुता के सम
तीनों लोक मांहि नाहि लखी ही भलीसी है ॥१॥

राधिका चितौन अति चंचल चपल चारु
कीन मन लीन दीन मोहन विचारे हैं ।
अति ही प्रवीन झीन मध्य कुच पीन जाके
उन्नत कलस हेम कोटन उवारे है ।
ऊजरे उरोज पर रोज ही विराजें साजे
हार हीये मोतीन के पीके अति प्यारे है ।
शोभन सृजो है यंत्र तंत्रन विचार मंत्र
यह तो स्वतंत्र रस रसिक निहारे है ॥२॥
चंद ते अमंद मुखकंज मंजु रचो विधि
दाड़िम अधर और उज्वल हसीसी है ।
अलक भुजंग कारे नैंन अनियारे बान
भ्रकुटी कमान पें गुमान से गसीसी है ।
कम्बु कंठ कंचन के कलस समान कुच
सुंदर उदर नाभि बापी जों बसीसी है ।
रम्भा सम जंघा युग पाद पद्म मृदु अति
गति है प्रसंस राजहंस सी लसीसी है ॥३॥
उज्वल अनूप रूप भूप वृषभानुजा को
जाकी मुख कंज मंजु चंद से अनूठौ सौ ।
अंजन सौं रंजन से खंजन समान नैंन
बैन सुन मैन हूँ लजाय होय रूठौ सौ ।
कंचन के कलस सदृश कुच द्वंद जासु
चतुर सुजान काम्ह रहै ना मनूठौ सौ ।
शोभन सुभाव भाव चरन सरोज मृदु
ऋजुता अरुनता दिखात सबै झूठौ सौ ॥४॥
दो०—श्रीराधापति जगति की हरौ विपत्ति कृपाल ।
भक्ति भाव विस्तार करी मेटौ माया जाल ॥

क०—सो तो सुधा हती अति जड़ता स्वरूप सुर-
भूप कौ करायो जिन मान अपमान है।
गडुड पिटायो धायो सो तो निज प्रान आन
राहू की लिवाय जिन छिन माय जान है।
प्रगटी गरल साथ नाथ कों करायो भेक
तीय को अभी कौ ऐसौ करौ गुन गान है।
देव दैत्य माँय द्वंद अति सै करायो जिन
ऐसी मसी सुधा कहा सुधा के समान है ॥५॥
जाकौ तौ अनूप रूप कहत न आवे कछु
शोभा औ स्वभाव की में करूँ का वखान है।
हास रास एसी कहूँ लखी नाहिं आन ठौर
वोलन मिठास में तो रस ही की खान है।
डोलत में जाकी गज हंस हू लजाय जाय
पांय जावक सुहाय नूपुर सुजान है।
शोभन भनत जाकी उपमा न पाई जात
राधागुन गान में तो राधा ही प्रमान है ॥६॥
चंदन की चौकी पर चपला सी चंदमुखी
वैठी अनाहन कौं कमला छांव लूट लूट।
दासीजन अंगन में मंज्जन मुदित देत
कंज से कपोलन पै अलकावलि छूट छूट।
कंचन के कुम्भन में भरे धरे स्वच्छ नीर
शोभन जुड़ारत सरीर गंध घूट घूट।
पौंछत सहेली स्वेत वसन दशन कांति
सुंदर स्वरूप साटिका से पड़े फूट फूट ॥७॥
रुचिर विताना तरै ताना गुन गाना करें
सुनकें सुताना सुत प्यारे से लगात हैं।

शोभन वखाना वृषभानुजा को रूप नाना
देख के विमाना आन भूमि गिरजात है ।
बैठे सुजाना मनमाना वहु दाना करें
देखवे कों सुक विधि शेष तरसात है ।
एहो अजाना मम जाना कैसे होय सखी
चांदनी की चमक चितौत चुभजात है ॥८॥

दो०—श्रीयुत राधा रूप निधि कौ कवि कहन समर्थ ।
जासु नाम को शेष सुक विधि नहिं जानत अर्थ ॥९॥
सो कछु में अति मूढ मति कह्यौ भक्ति अनुसार ।
ताको कवि कुल समझ पुनि करियों सवैं विचार ॥१०॥

(प्रथम प्रेम प्रतीतो)

दो०—प्रथम समागम दुहुन को वरनौं मति अनुसार ।
जातें प्रेम प्रतीति अति वढ़त जुड़त चित प्यार ॥१॥
गई वालता वालतन तन तरुणाई आय ।
झलकी जव तव पीउकी भई कछुक जिय चाय ॥२॥

क०—नैंक मंजु अधर सु हसन विकास भई
वास गही नैनन में रंचक टिढ़ाई है ।
विभ्रम समेत गति नेंक जासु मन्द भई
वंद नैंक नैंक भई मति को थिराई है ।
शोभन कवि कछुक उरोज खोज हू से भये
उदित विलास भये नैंक त्यों लुनाई है ।
उज्वल सिंगार भये पति अति म्हाल भये
वाल तन ईषत दिखात तरुनाई है ॥३॥

दो०—प्रीत रीति दोऊ चहैं और समागम ख्याल ।
लाज गाज तें सकुच अति करत झिझक मनु वाल ॥४॥

यदपि सखिन सों करत निज प्रकट कछुक पति प्रेम।
तदपि पास पिय जानमें करत लाज कों नेम ॥५॥

सो०—पिउ आयो गृह जान लुकी जाय परजङ्क पै।
नायक चतुर सुजान जाय भरी निज अङ्क में ॥६॥

क०—जंघन कठोर जोर बाँह को मरोर घोर
पति की न देख उर कंचुकी दुरावती।
नीवी की गाँठ को सुसाँठ मार कीनो हठ
साटीका की छोर मोर पायन दबावती।
सोभन सुछल कर दृग तें सुजल बिंदु
डार डार नार अति पीकों दुरावती।
कवुक कुटिल युग भृकुटी चढ़ाय चौंक
देख पिय ओर हँसि मनकों चुरावती ॥७॥

दो०—तब तौ पिय अति दीन ह्वै मोनति करत बनाय।
हे मृगनैनी लाज तजि बोलो कछुक सिहाय ॥८॥

सवैया—

अपनो कर जानौ हमें मृगनैनी तनैनीन भौंह करो रिसतें
मन मोद में राखो जु भाखो कछु रति केल कों चाखौं चहूँ दिस तें।
कवि शोभन सांवो न कांवो कहौ हँसि हेरो निवेरो हमें किसतें।
परयङ्क चढो पिक बैनी निशङ्क मम अङ्क में बैठी कछु मिसतें ॥९॥

पिय काजै तजै कुल लाजै सबै गुन मान भला जिय जानतो हो।
पितु मात औ भ्रात न प्यारें लगें पति हेत यों गीत न गावती हो।
कवि शोभन कौन से हेत हमें अब प्राण प्रिया तरसावती हो।
लखि घूंघट सों मुसक्याय कवे निज नैन क्यों फिर दुरावती हो ॥१०

हम जाने है दोष कछू तुम्हरो नहिं औरहि ओर सिखाई तुम्हैं।
पतितें मत बोलियो जाय अबी अस बारहि बार पढाई तुम्हैं।

कवि सोहन गोहन जो पै पड़ै पिउ तोपै रुवाई बताई तुम्हैं ।
गृह कोन में मौन सो रहियो लगी अलगी कर बात घुखाई तुम्हैं
॥११॥

निशि केली कहानी कहो तो कहै पिय पास लों जात डरावती ही ।
पति पानि से पानि छुड़ाय कबू अति दीन ह्वै बैन सुनावती ही ।
कवि सोभन कापों न भाकौ कछू उठ अंक सों संक सो धावती ही ।
हौलों जु छुओ खनकेंगी चूरी सनकै सनकै अस भाखती ही ॥१२॥

क०—सुन्दर बरन मन हरन स्वरूप जासु
बेस हू अनूप छवि भूप सुखमाकी है ।
बिज्जु सो बसन अरु हसन लसन चारु
दसन विकास रदछद की छटा की है ।
सोभन भनत बाम भाग वृषभानुजा की
सोभा लख होत है रमाहू जू फिदाँ की है ।
ताकी जिन एक बार छाकी हग कोर राधा-
बल्लभ की झाँकी बाँकी अजब अदाँ की है ॥१३॥

दो०—तब पीय के मृदु बैन सुन कछुक हस जीय बाल ।
बोली बचन बिलोक मुख निज पति को रति जाल॥१४
मैं अजान तुम रसिक बर हौ सुजान गुन मान ।
ताते कृपा बिचार जिय आज दीजिये जान ॥१३॥

क०—सुनियें सुजान रस खान गुनमान काह्ह
प्रान पति मिन्नति बिचार मों अजान की ।
एहो सुख रास हास रस को प्रकास आस
पास सखी सुनकें करेगी त्यों अमान की ।
सोभन भनत नेंक नेंम तो बिचारो कुल-
कान को न टारो जिन मारो लाज बान की ।

अवतो निहारो पति प्रीतम हमारी ओर
भोर चित चोवात करूँ ना गुमान की ॥१४॥

सवैया—

देउजू छाड़ जो चाहौ भलो मोय माय को सोहन हों झगरोंगो।
काल के भोरे में आपुहि लाल बुलाये बिना चुप आय लुकौंगी।
सोभन जोपै कहोगे कछू उतपात में ताऊँ में नाय करोंगी।
कंचुकी चोली उतार सबै पिय प्यारे सों धाय कें अङ्क भरोंगी ॥१५॥
बहु जोर तें तोर तनी अपनी टकटोर कपोलन जोर रहौंगी।
जो पै करोगे अनीत कछु अकुलाय में धाय ते याय कहौंगी।
सोभन बात रहैगी तबी पिय आन में बात सबो त्यों सहौंगी।
चुम्बन जोपै कियो तो कियो पर आज में लाज तें ह्याँ न रहौंगों॥१६

क०—बार बार पायन परौ जू हों तिहारे पिउ
तोउ तुम मेरी बात जीय ना धरत हो।
अति अकुलाय हाय हाय मुख जोपें करों
तोउ हँस मोसे कहो नखरे करत हौ।
सोभन भनत भय है तिहारो सों हमसें
वैर वेर भामते के भावरें भरत हौ।
हा हा कर पांय पर जो पै में चलों जू नैक
तोपै धाय आय भुज मेल पकरत हौ ॥१७॥

सो०—ऐसे कठिन कठोर प्राणनाथ तुम क्यों भये।
छाड़ देउ भुज मोरे जान दीजिये सखियन ढिग ॥१८॥
एयों सब पुन भोर सपथ करौ निज गुरुन की।
कहौं दोउ कर जोर प्रीतम तुमसों सत्य वच ॥१९॥

दो०—तब नायक तीय करकमल छाँड़ मनोहर बैन।
बोलो हँस रस रुचिर अति प्यारो चित सुखदैन ॥२०॥

तुम सुख में सुख है हमें तुम दुःख में दुःख जान ।
तातें तुमको आज हम छाड़ देत गुन मान ॥२१॥
आमनि मनमोहन कहो काल रैंन कर नैंम ।
अब सब तुह्मरो देखि हैं कैसौं है दृढ़ प्रेम ॥२२॥

सो०—चली अली कर जोर भली भली कहाँ छली सों ।
लई सखीन कर ओर पकर करत पीय बात हँस ॥२३॥
आई भली निहोर प्यारे के कर आज तुम ।
होंगी चतुरन मोर नायक कौं छल बस कियो ॥२४॥
इह विध सखीन समाज हसत हसावत सबै मिल ।
प्यारी के चित लाज सकुच होत अतितास में ॥२५॥
इह विध प्रेम प्रतीत कही यथामति मैं कछू ।
सोभन कवि पुनीत लीजौं निज मन सोध सब ॥२६॥
इति प्रथम प्रेम प्रीत समाप्तिमगमत् ॥२७॥

क०—आज रैन मैन सैन अति हि सताई मोहि
नीद हू न आई नैन आलस छयौ है री ।
नैक दृग झाते ही सुपनो सो देखों एक
पेखों नहि ऐसो अंक कंपन भयो है री ।
जोहि जोहि तारापति वियति सी होय वीर
सोभन समीर तोर लागत भयौ है री ।
मेरे मन मेरी आली जानत हौं मेरी जान
नैन वटमारन के भेद में गयो है री ॥१॥
बैठो चारु चौकी पर चोसर सों खेलें वाम
काम नाम लेते कोउ श्याम यों कहो है री ।

सुनत ही अचेत सी अचानक भई बाल
ख्याल चाल भूल हाल अद्भुत भयो है री।
सोभन सहेली लाल बीजन बयार करें
पूछत झकोर तोहि कहा ये भयो है री।
मेरो मन मेरी आली जानत हौं मेरी जान
नैन वटमारन के भेद में गयो है री ॥२॥
कीरत लली जू तो रंगीली रंग रावटी में
चित्र की पटी में रूप नटवर नयो है री।
तवतें छकी सी झिझकीसी त्यों जकी सी होय
वकीसी थकीसी मोय मद सो छायो है री।
सोभन सहेली चोली अद्भुत अकेली लखि
पूछत नवेली तोहि कहाधों भयो हैरी।
मेरो मन मेरी आली जानत हौं मेरी जान
नैन वटमारन के भेद में गयो है री ॥३॥
सुन वीर एक दिन धीर के समीर तीर
श्यामल शरीर द्रुम भीर में भयो है री।
तवतें सुहात नहिं वात गात भूषण हूँ
दूषण अनेकन सों मनसिज छायो है री।
सोभन न जानो जाय धाय से कहूँ मैं आय
हाय माय आज मोहि टोना सो ठयो है री।
मेरो मन मेरी आली जानत हौं मेरी जान
नैन वटमारन के भेद में गयो है री ॥४॥
बैठी सुभ सदन मदन सी मयंक मुखी
सखी करकंज निज कर से गह्यो है री।
देख वीर तीर की सी पीर वार वार होत
धीर ना धरत जीय शोक से छयो है री।

सोभन सयानी सी अयानी किहि हेत होत
याहि नहिं जानी यह मन्मथ नयो है रो ।
मेरो मन मेरी आली जानत हौं मेरी जान
नैन वटमारन के भेद में गयो है रो ॥५॥

गुलफ—

परम पवित्र पद पदम प्रभा के पुंज
गुंजरित भ्रमर युगल के सुलफ को ।
कैंधौं विधि विमल वनाये वररूप रास
धरवे कौं संपुट सुभग ज्यों उलफ को ।
सोभन भनत कैंधौं भूधर सिखर उच्च
राजत सुभग गाँठ रेसमी कुलफ की ।
कैंधौं शशो भानु विव एडिन प्रकासें कैंधौं
गैंदुआ मनोज ऐसी गोरी के गुलफ को ॥१॥

कैंधौं पीत कंज वीच मधुप अनूप वैठो
कैंधौं हेम मणि वोच नीलम लगाई में ।
सोभन भनत कैंधौं विस्वकरमा ने दोनीं
कज्जल जल विंदु में सीस को लुगाई में ।
कैंधों छवि रास माहि सोयो रसराज आय
ऐसो तिल चोरें चित चुवक गुलाई में ।
कैंधौं ये द्विजेस में दिनेस तनया को विन्दु
गर को गुपाल कैंधौं गोरी को गुराई में ॥२॥

कैंधौं महारास में सुहास रस अंकुरित
संकुरित कैंधौं ससि तम को भिराई में ।
कैंधौं अरविंद में वलाका सुत वैठो आन
कैंधौं खार सिन्धु विन्दु गिरो भानु जाई में ।

सोभन भनत कैंधौं मोहन की नासा मध्य
एसो सुललाम मोती सोभत लुनाई में ।
कैंधौं नोलगिर वीच राजत सुचंद्र मणि
कैंधौं लुकी प्यारी आजा कान्ह की कलाई में ॥३॥
कैंधौं निसि ईस में फनेस के विराजें सुत
कैंधौं में कलंक रेख युगल निवेरो है ।
कैंधौं नव कंज लख ललित भ्रमर भोर
श्रमित दिखात काम अंकुस दरेरो हैं ।
सोभन भनत रूप ताल मैं शिवार कैंधौं
मोहनी महल में कव्यंद कैंधौं गेरो है ।
कैंधौं नंदलाल के मृदुल द्वारपाल श्याम
ऐसी लट लटक हरत मन मेरो है ॥४॥
सुभग सरोज मृदु चरन विराजें कैंधौं
अलि युग राजें छकि धुव महु माल की ।
कैंधौं है मनोज भूप जू के दुंदुभी सु लघु
कैंधौं मनी लीलम वनी घनी विशाल की ।
सोभन भनत कैंधौं श्याम रेसमी है ग्रन्थि
कैंधौं रसराज की कुलफ है तमाल की ।
एडिन पै छवि छाजै लखि रति मैन लाजैं
पदम पदन राजै गुलफ गुपाल की ॥५॥

जंघ—

कैंधौं अनूपम रूप मन्दिर के थंभ चारु
दम्भ दूर करत मनोज हू के मन हैं ।
कैंधौं नव ललित कीसोर चित चोरवे को
विधिना रचो हैं जंघ कंचन वरन है ।

सोभन भनत रस उज्वल उदधि के ये
प्रीतम सनेह गुण मंथन करन हैं ।
करि करवर अैंसो मृदुल सुभग तैंसो
उपमान ओरवें सो सरस अवन है ॥६॥
रति मति मोहक ये पति प्रान पोहक ये
सतीमान खोहक ये गरव भरति है ।
रूप रस आसन ये मैन के सिंघासन पै
सोरभ विकासन ये मन कौ हरति है ।
सोभन भनत गज सुंड के सकोच नये
रंभा मद मोचन ये करभ दुरति है ।
जंघ मृगलोचनि ये विधि ढ़ारे मेरी जान
ताके कन तारे होय व्योम में परति है ॥७॥
जानु जुग जेव जुत जवर जवाहर सैं
जोम भरी जोवन के जंघ में दिपत है ।
रति पति ताकी त्यौ लजात लख लौन नैन
संपुट अचैन वैन वोलत चलत हैं ।
ऊरू:—सोभन भनत रूप रस को अनूप थान
मान मद मोचन गोपाल को करत है ।
रमा उमा रंभा ओ तिलोत्तमा लुनाई पेख
रूप मद छाड़ वार वार सों कँपत है ॥८॥
रति के सदन रति पति के दमन मान
विधि तें अनूप रचे कौंन ये अनोंखे है ।
कोमल कमल तें अमल भल चंद्रकतें
कैंधौं कंज नाल ये सुधा सर के पोखे है ।
सोभन भनत ब्रजचंद चित्त चोर के ये
तोरक श्रमित दुःख विमल अदोखे है ।

कंचन के वरन हरन ये तिहारे प्यारी
उरू युग अजब सुभग अति चोखे हैं ॥९॥
सोंतन के सोच ओ सकोच के करन हारे
रति मति मोचन नवीन ये विराजें भल ।
करि करतेसिजल कंचन के खंभ मनु
कदली कपूर कैंधौं नाल है कमल ।
सोभन भनत मैंन मन में अचैन दैन
लैन चित चोर चित नित ही रहैं विमल ।
प्यारी ये तिहारे मृदु उरुन की उपमा को
खोजवे में कौंन कवि होत ना विकल पल ॥१०॥

नितंब—

कैंधौं नव अंग में अनंग रंग रास रचो
कैंधौं है अजब सृंग भूधर विसाल को ।
कैंधौं यह जघन सघन थंभ मूल राजै
कैंधौं करि रथ चक्र आकृत रसाल कों ।
सोभन भनत कैंधौं विपरीत केलि कुल
मंडित सुभग गादो मैंन महीपाल को ।
कैंधौं सुधासर को अनूप रूप जूप मंजु
ऐसी लसैं श्रोनो लौंनो गजगौंनो वाल को ॥११॥

लाल रंग वारे जेव वारे घूम घेर वारे
घाँघरे सों घिरे नाउ घारेउ घरत है ।
सुख मास मूह वारे प्रीय प्रीत नीत वारे
जग जस जीत पारे मनकों हरत है ।
सोभन नगारे कैंधौं काम के उलट डारे
उपमा अतूल प्यारे रूप ते भरत हैं ।

कवि मति मोह वारे संभ्रम करन वारे
ऐसे ये नितंव थारे कौतुक करत है ॥१२॥

कटि—

तार है कि वार है कि वानी की सी धारहै कि
सोभित सिवार कहा होत मन धोखौ सौ।
रति पति मार है कि राजत तुषार है कि
प्रतिपद संभार कहा राखो शशि चोखों सो।
सोभन भनत त्यों लुकंजन अयार है कि
वुद्धि कौ प्रचार चारु होत नहि सो खों सो।
प्यारी जू तुम्हारे लंक अंक ना कियो है विधि
मेरी जान ख्याल कोई राखौ है अनौखौ सो ॥१३॥

सांचे माझ ढारे रचि पचि कैं सभाँरे विधि
सिगरे तिहारे अंग रंग रचियत है।
तामें आय जोवन जिलोह कछु साजी ओर
पीन कुच उन्नत नितंव करियत हैं।
सोभन भनत विपरीत रीत कीनी सव
पोनन कौ खीन षोन पोनद भरियत है।
अति लचकीलों लंक अंक सो निसंक तापै
ऐतौ लै सुजान कहाँ भार धरियत है ॥१४॥

कोटिक कलानिधि लजात लखि जासु रूप
कोमल कलान कला निधि विधि राचो मुख।
रचत रचत भयो अति हीं ससंक मन
कौनसे जतन मोतें ऐसो वनि आयो रुख।
सोभन भनत तिहिंकाल वाल कौ ललाम
रूप देखि देखि कैं विरंचि वूड़ो सिंधु सुख।

ललित लुनाई भरे राचे सब अंग अंग
झोनी कटि रही को रह्यौ है हिय ताके दुःख ॥१५॥
सब्द है अकास जैसे वायु कौ है भास जैसे
सुमन में वास जैसे मानवो परत है ।
सागर अपार जैसे विधि जाकी धार जैसे
गंग यमुना में ताहि कहि वो परत है ।
सोभन भनत वेद विधि औ पुरान जैसे
सकल प्रमान कर जानवो परत है ।
परवा कौ इंदु जैसे ब्रह्म सुख सिंधु जैसे
ऐसे ताकौ लंक अनुमान वो परत है ॥१६॥

अथ नाभि—

कैंधौं रूप रास की अनुपम विकास भास
वापी त्यों विलास जहाँ करें मैन रति है ।
कैंधौं रसराज कौ अनूप रूप कूप मंजु
मृदुल सघन द्रुम राजी राजै अति है ।
सोभन भनत कैंधौं गिरि की दरी है चारु
गह्वर अगार देख थाकें मन गति है ।
कैंधौं प्रान प्यारी ये तिहारी वारी नाभि लसे
हारी जिन रसिक विहारी जू की मति है ॥१७॥
कैंधौं रस सरिता कौ भ्रमत भमर कैंधौं
सुभग सृंगार कौ गुफा सी पड़ै जान है ।
कैंधौं यह रूप भूप जू को है भवन चारु
कैंधौं सुकमार सरसार भ्राजमान है ।
सोभन भनत कैंधौं राजत गंभीर भोर
रोमराजी तीर मंजु वापी निरमान है ।

कैंधौं ये सुजान रसखान पिय मान हरै
मेरी जान नाभी जासु एतोरी गुमान है ।।१८।।

छवि को छबीली ये रँगीलीं सर सुन्दर सों
भूषण विमल जल राजत अथाय हैं ।
त्रिवली सोपान मान अति ही समान जाहा
रोमराजी द्रुमन की छाय रही छाय हैं ।
सोभन भनत तामें डूबो सी सुताई सुन
जोवन धुआई सो सुहाई वहू भाय हैं ।
मदन गुपाल लाल जू कौ है मतंग मन
कामघामडरो परो रहै आय धाय हैं ।।१६।।

अथ उदर—

कोमल विमल भल नवल कमल दल
कैंधौं ये अमल वीर पोपर को पात है ।
उदित नवीन कैंधौं चंद्रक चमक चारु
होत अनुहार भानु विव को सुजात है ।
सोभन भनत अभिराम रति काम जू को
सुभग विराजमान भूतल सुहात है ।
चिक्कन सुघर ये उदर दर दीखै कहा
ऐरी जाय देख मनमोहन रिझात है ।।२०।।

मंजुल मृदुल मीन केतु महिमा की काहा
मुदित मही है मन मोहित मुनीन कौ ।
पल्लव नवल कल छवि तें सिजल काँहा
राजत विमल पान वल्लरी नवीन को ।
सोभन भनत कैंधौं रूप झल झल होत
ऐसो ये अकोत सो सहेट है गुनीन को ।

नाभिसर सुखकारी त्रिवली तें छवि वाढ़ी
ऐसो ये उदर पनहारी है प्रवीन को ॥२१॥
पिय मद कद प्रीति रीति की सुहृद ऐसो
सोहै नाभि ह्रद तासु जायवे को पथ है ।
कैंधौं ये अनंग रति संग रंग करने कों
कुच गिर जान कौं सोपान सो अकंथ है ।
सोभन भनत कैंधौं रूप की अनूप विधि
सची मृगनैनी के त्रिवेनी निज हाथ है ।
मेरी जान त्रिवली के मिस ये अली के छली
देख रेख करी करवे कौं दसखथ है ॥२२॥
मुदित उदित दुति दिपत दिगंतन में
करों ये विचार मैन सैन निज साजी है ।
आय बैठि चलौ निज स्यमंदम अनंदन सों
चंदन औ वंदन सों छवि अति छाजी है ।
सोभन भनत चाल चलत कुलांक भरें
अति ही चलाक चाक वांके जासु वाजी है।
तास में चलें जे चक्र ह्वै कै गति अति वक्र
तासु रेख देख अली त्रिवली विराजी है ॥२३॥

सवैया

कोऊ कहे मनमोहन के मनजान कै काज सुपान सजी है ।
कोऊ कहै त्रिवली ये भली वृषभानु सुता तन आन छजी है ।
सोभन कोऊ कहै कवि रेख अनेक न एक वनाव वजी है ।
उपमान समान सी जान विधि निज हाथ सों लेखनी तोन तजी है।
॥२४॥

रोमराजी—

कैंधौ ये सिवार जाल अति ही सम्हार चारु
उदर सरोवर में राचो रचि पचि है।
कैंधौं ये अनूप नाभि कूप तें सुरूप रस
वल्लरी नवीन छीन लसो अति लचि है।
सोभन भनत कैंधौं जन्त्र करवे कों मन्त्र
तन्त्र कौ प्रमान जान लिखौ विधि जचि है।
कैंधौं यह रोम राजी मेरी जान पिय वाजो
जीतवे कौं साजी तीय वाजो अनि वचि है ॥२५॥
अमृत ललित कृत कैंधौं ये विचित्र चित्र
चित्रित कियो है श्याम लताकों विरंचि भल।
कैंधौं ये सुभग नभ वापी को चतुर वर
कियो है अनंग रंग मारग को थलकल।
सोभन भनत कैंधौं रूप की अनूप छवि
रोम रोम राजी तातें रोमराजो है विमल।
मेरो जान प्रीत रीत प्रीतम प्रतीत कर
लिखे हैं पुनीत अंक उदर कमल दल ॥२६॥

अथ कुच—

प्रगट वराह जैसे मीन से प्रवीन चित्त
हरत कठोर कुच कछप समाके है।
हृदय विदारक त्यों सम नरहर जू के
द्विज ज्यों हरत तन मन सुकुमाके है।
सोभन भनत अभिराम राम श्यामजू से
सबतें अजित भृगुवर उपमाके है।
बौद्धसम बुद्धि के विमोहक सुथिर तामें
कपिल समान अवतार दसमाके है ॥२७॥

दर सें सुवर स्वेत विधु की सी छवि देत
विषसम लेत सोंत प्रानन अघाय है ।
कौस्तुभ समान दुति अमृत कलश रुचि
धनुष समान कोर कंचुकी लगाये है ।
पंकज वरन धेनु सम साधुता में भल
रंभा सें अमोल हय काम तरु जाये है ।
रमा से अनूप पीन तामें गज मोहक है
मद से यों चौंधे हू रतन कुच पाये है ॥२८॥

उन्नत अनौखे पोखे अमीरस चोखे यह
सोत हीय तोखें देत अति ही सजोर है ।
कंचन सुमन त्यों सरोज कलिका से भल
उज्वल विमल मनमोहन मरोर है ।
सोभन भनत कोक शोक के करन चारु
चंद से अनंद करें लोचन चकोर है ।
सुनरी नोहोर मोर भोर वोंरो रूप हृद
देख ये कठोर चित चोर कुच तोर है ॥२९॥

कैंधौं मृदु कोक युग गंग की तरंग रंग
लेत है सुढंग वेठे आनंद मगन है ।
कैधौं ये मुनीश ईश ध्यान कों करत शीश
शोभित असित केस कंचन वरन है ।
सोभन भनत कैंधौं राचे मनसिज जूनें
कंदुक विमल द्वंद दुंदभी सघन है ।
कैंधौं सित कंचुकी फटिक मणि सम्पुट में
चामीकर कंज कलिका से हरें मन है ॥३०॥

सवैया—

ज्ञानीन को धन ज्ञान हरो मुनि
ध्यानिन को मन लूट लियो है ।
जोगौ जती सब साहतिनैं अति
वे धन को मग घेर लियो है ।
सोभन वेद पुरानन को मत
सो निज सासन फेर लियो है ।
पीन पयोधर उच्च गिरीन्द्र पैं
मैना मनोज मम वास लियो है ॥३१॥

दो०—श्रीयुत राधारमण पद पदम पाँखुरी कोर ।
नित्त हीं धर ध्यानकर बंदौ युगकर जोर ॥१॥
कीरति कुल कीरत सुता कीरति जग में छाय ।
कीरति तिनकों देत हैं कीरति कीरति धाय ॥२॥
गुण गण गोविंद प्रिया के गुन गुन थके गणेस ।
विधि विचार बूड़ो जलधि पार न पात शेष ॥३॥
वंदन कर ब्रज चंद को करों कछुक गुन गान ।
जो मोषों कछु ना बड़ों लीजो सोध सुजान ॥४॥
यह अनूप है रूप को सिंधुन जाको पार ।
पावत विधि शिव शेष हू तँह किम मनुज विचार ॥५॥
सब रसिकन की वीनतो करो सदा कर जोर ।
जिनकी कृपा कदम्ब से नखसिख कृत भो मोर ॥६॥
कोटि कोटि छवि छल गई जाकी छवि को देख ।
मम मूरखता देखियें करों तासु छवि लेख ॥७॥
मो मति गति अति तुच्छ है राधा रूप अनंत ।
ताकों कैसे में कहों कहवावत हैं संत ॥८॥

श्रीवृषभानु कुमारिका करौ कृपा की दोठ ।
तौ स्वरूप के कहन में पड़ै न जैसे नीठ ॥९॥
श्रीवृंदावन यमुनातट जटित मणिनमय भूमि ।
जहां स्वामनी सखिन संग चलत मुदितमन झूमि॥१०॥
तिनकों नखसिख कहत हौं निज मति के अनुसार ।
कविवर शोभन रसिक जन लीजो सवैं सुधार ॥११॥

अथ चरण—

क०—गुलकी गुलाव की गुलाल जवा जवक की
पावक प्रवल त्यों कुमाचें कुमराती है ।
चारु चारु वारिज की ईंगुर प्रवालन की
नीकी लाल माल द्युति फोकी पड़जाती है।
सोभन भनत पार जात वारि वारि जात
दुरित दुरात मन मौंजें उपजातो हैं ।
कीरति कुमारी प्यारो पगन तुम्हारे कवि
उक्तें मड़राती खीस जाती फिर जातो है ॥१॥
भुवि सुखमा के कैंधौं सदन प्रवीन कैंधौं
कलप लताके ये नवीन पात ताके है ।
अति ही पवित्र चित्रता के वनता के मंजु
ध्यांन में धरत मुनि गामें गुन जाके है ।
सोभन भनत नव सिद्धि रिद्धि ताके छवि
मुषित रमाके सविताके जनता के है ।
वढे पुण्य ताके पाये यह गुरुताके जिन
निज चख झाँके पद पदम प्रिया के है ॥ २ ॥
नख—कोमल कमल कुल विमल गुलाव दल
गुल मखमल भल नैंक ना दिखाती है ।

विद्रुम गुलाल जवा जावक सुलाल पुनि
नूतन तमाल दल दद्यु ति दूरि जाती है ।
शोभन भनत चख लख नख कोरन कौं
ससि की मयूख सूख सूख सड़ जाती है ।
जन सुख कारी तन मन धन हारो नव
नवल किशोरी पद मद कद जाती है ॥३॥

अथ हस्त—

कैंधौं थल कमल विमल भल राजें कल
कोमल कमल कैंधौं युगल जवासी है ।
कैंधौं यह नूतन प्रसून जवा जावक को
कैंधौं ये चुनी है विधि वहु विधि रासी है ।
सोभन भनत कैंधौं किंसुक कमोदनो के
नीके ये अनूप रूप फूल की विकासी है ।
मेरी जान गोरीं भोरी नवल किशोरी जू को
पिय चित चोरी कर वर होत भासी है ॥३२॥

कोमल कमल दल हूँ ते वर कर युग
राजत सुभग चारु चित चख चोरी कें ।
आँगुरी सुकेल को फरो सी सुथरी है भल
सोहत अंगूठो त्यों अनूठो मृदु गोरी कैं ।
सोभन भनत छवि रास को विकास होत
जावक अकोत दुति दिपें कल भोरी कैं ।
मानों कंज वैठी आन इंद्र की वधूटी तैसी
लसें विंदु महदो की नवल किशोरी को ॥३३॥

कैंधो ये अनूप रूप वारिध अनङ्ग मथ
मथ कैं निकासे नग जग मग जोती हैं ।

कैंधौं ये जड़ाय जड़े गोल गोल है अतोल
अति ही अलोल त्यों अमोल भल मोती हैं।
सोभन भनत कैंधौं कामजू को चेटक है
नाटक लपेट कैंधौं हाटक अकोती है।
मेरी जान ससि निज जान कें कलंक अंक
भयो प्यारो नख आन तासु दचुति होती है॥३४॥

हाटक हटक जात पात पार जात गात
अति ही लजात देखि देखि छवि जासु है।
विधि नैं विचित्र कृत्य कीनो रेख लेखन सों
अंकुश सुभग चारू छत्रहू को भास है।
सोभन भनत ध्वज सिजल विराजें जहाँ
जातें नित रति पति गति को विलास है।
नित सुख रास त्रास काटत स्वभक्तन को
मेरो मन गयो प्यारी तेरे कर पास है॥३५॥

अथ भुजा—

कंचन लता सी सुखमासी ये सुरूप रासी
लसें चपलासी नव नेह कीं सी वेलो है।
परस करें ते मखमल सें सुभल लगें
कोमल विमल कलधूत छवि पेली है।
सोभन भनत मृदु विधिने सुरचि पचि
काम को सचोंरि ढाली मोहनी सी हेली है।
रुचिर मृणाल नाल लसित ललित यह
ऐरी भुजा मूल तेरों सुभग नवेली है॥३६॥

कलपलता है कैंधौं नूतन कला है मंजु
जामें नित मृदु कंज फूले ही दिखात है।

कैंधौं देह द्रुम माझ साखा विविराजै भल
कैंधौं ये अनूप रूप वल्लरी दिखात है ।
सोभन भनत कैंधौं साँचे भर ढार विधि
दामिनी सुभग रूप अति ही सुहात है ।
कैंधौं सुख सरद हू कौं सुंदर मृडाल नाल
मेरी जान नवल किशोरी भुज हाथ है ॥३७॥

अथ पीठ—

कैंधौं ये अनूप रूप भूमि है सुकंचन की
नीकी सुखमा की जामें छवि की तरंग है ।
कैंधौं यह वेनी पन्नगी की है नवीन थान
सुभग सुजान जहाँ करें नित रंग है ।
सोभन भनत कैंधौं कदली की पात कैंधौं
नेह कौ अभाव जाकी धार की सुसंग है ।
कैंधौं यह प्यारी जू तिहारी पीठ दीठ कर
लुकी भय संभुतें विराजत अनंग है ॥३८॥

अथ कंठ—

कंचन कौं कंबु कैंधौं अंबु रूप भरयो घट
जासु दुति अति पट माझ तें चमक जात ।
मदन कदन मद आनंद सदन कैंधौं
वारिज वदन कैंधौं नाल जिमि सरसात ।
सोभन भनत कैंधौं मंजुता त्रिलोकी हू की
जोत कें त्रिरेख रेख करी विधि निज हात ।
कैंधौं नव रस वस करन वनन जासु
कैंधौं ये प्रकास कंठ राधिका के दरसात ॥३९॥
कमल मृणाल वाल वदन सुकंठ कंठ
कोकिल लजात सुन सबद सुहामनो ।

त्रिविध त्रिरेख रेख राजत सुलेख कवि
सोभन विवेक भूले मुनि सुनि गामनो ।
कंबु कहा अंबु भरो कलस विकल पल
पलक निरख राधिका को कंठ भामनो ।
... ...
... ... ॥४०॥

अथ मुख—

कोमल कमल थल कमल विकल होत
विमल विकास जब होत है सुवास कौ ।
चंद्र सुखकंद मंद होत लखि सोभा सिंधु
लाजत अनंग त्यों सुरंग के प्रकास कौ ।
सोभन भनत वृषभानु नंदिनी कौ मुख
सुख कौ सदन होत रदन के भास को ।
अति पुण्य पुंजता के जागे जगमाय वाके
कीरत सुता के जिन ताके मृदु हास कौ ॥४१॥

राधे जू कौ वदन सरोज सौ कहूँ जो तोपे
अति विपरीत मति मेरी में दिखात है ।
वो तो है अनित नित भानु लख विकसित
जाकों तो विकास भास रहै दिन रात है ।
सोभन भनत वह जड़ चल सौरभ है
जाको तो सुढंग रंग सौरभ दिखात है ।
याही तें लजाय जलजाय अति विलखाय
नित ही करत तय मो मन लखात है ॥४२॥

मानों काम केलि को वनायौ मुख सर विधि
त्रिविध समीर रूप नीर दरसत है ।

लोचन कमल कंज नील मृदु अंजनन
प्रेम प्रफुलित निसि दचोस सरसत है ।
सोभन भनत मंजु वरुणी शिवार तार
तारायुग सफरी तरल तरसत है ।
सीतला के दाग भाग लगो प्रेम वाग कैंधौं
प्रीतम विहार प्रेम विंदु वरसत है ॥४३॥
पूरन नीशेष मध्य कैंधौं ये कलंक अंक
सोभा के सरोज कैंधौं ओस विंदु पात है ।
कैंधौं सुभ लगण विचारि विधि निज हाथ
मानक जटित मंजु रचो जलजात है ।
सोभन भनत कैंधौं कंवन सुभू मिमध
अद्भुत अनूप रूप वोज से सुहात है ।
कैंधौं नेह वारिद सें सींच अनुराग वाग
कैंधौं ये सुहात मृदु सीतला के दाग है ॥४४॥

चिवुक—

कैंधौं चारु चंद्रक में नीलम प्रकाश कैंधौं
छवि हू को रास में विलास रतिपति को ।
कैंधौं अरविंद में सुहात है मलिंद कैंधौं
सविता सुता को विंदु इंदु में लसति है ।
सोभन भनत कैंधौं कंचन को भूमि माझ
कैंधौं असित वरण मन हरन सजत है ।
कैंधौं ये जमुना हीं में भयो तम संकुरित
अंकुरित कैंधौं तिल चिवुक दिखति है ॥४५॥
कैंधौं पीत कंज विच मधुप अनूप राजै
कैंधौं छवि छाजैं हेम नीलम लगाई में ।

कैधौं छवि रास माझ राजै रसराज आज
ऐसों तिल चोरें तिल चिवुक गुलाई में ।
सोभन भनत कैधौं काम आज निज हात
अंकित करो है अंक इंदु की लुनाई में ।
कैधों गोल संपुट में सोवत है काम नाम
कैधों घनश्याम लुकौ राधिका गुराई में ॥४६॥

अधर—

कोमल कमल दल विद्रुम विमल विंव
छवि तें अमल रूप रास के करन है ।
सुख के सदन कोकनद के है वर चार
चारु मनि मानक तमाल के परन है ।
सोभन भनत मंजु पल्लव प्रवाल माल
कैसें कर सकें ख्याल सारथी तरन है ।
मद के करन मन धन के हरन अैसें
तेरे अधरन की न उपमा धरन है ॥४७॥
किंसुक प्रवाल जवा जावक पलास रास
होत है उदास जासु रंचक निहोरे सैं ।
कुसुम कसूम कासमीरी चारु केसर तें
दाड़िम गुलाब लाल ललित सुधारे सैं ।
सोभन भनत त्यों गुलाल माल जवा जाल
परन तमाल वाल लाजत सह्मारे सैं ।
मृदुल मजीठ दीठ लजत सुमनि नीठ
रदछद मीठ पीठ करें जब प्यारे सैं ॥४८॥

अथ दशन—

कुंद की कलीसी अरविंद में जड़ी सीं मंजु
इंदु में फबी सी मानो उड़गन पाँती सी ।

चंद्रक झड़ी सी बिम्ब अधर पड़ी सी मृदु
सुकता छड़ी सी कंज कोरक सुहानी सो ।
सोभन भनत चारु चुनित चमेली नव
वेली छवि केली लख मनहर काती सो ।
रस उपजाती द्विज पाती सरसाती यह
आनंद वढ़ाती खासी मीसी सौ सुहाती सी ॥४६॥

कैंधौं इंदु मंडल में पंकज कली कौ पुंज
कैंधौं अरविंद माझ तारावली भास है ।
कैंधौं नव किंसुक पलास रास सम्पुट में
छवि कौ प्रकास चंद्र कोरक विलास है ।
सोभन भनत कैंधौं मनोज के मुक मध्य
मंजुल विमल जलसिकर निवास है ।
कैधौं मृदु उज्वल सनेह विज्जु दाडिम में
कैंधौं ये दशन मन मोहक प्रकास है ॥५०॥

चम्पक वरन मनहरन वदन जासु
दाडिम अधर माँझ हसन सुहात है ।
वेली औ चमेली चारु कुंद को कली सुढार
वार वार डारे त्यों निवाड़े मनमाते है ।
सोभन भनत भरमत माति मीसी लखि
रस की नदी सी मंजु होत मुसकाते है ।
अमृत सलिल सरकेसरसों सकुरित
कैंधौं ये दशन चंद्र चंद कलजाते है ॥५१॥

रसना—

सारदा लजाय दूरजाय सारहारो लख
कमलखिजाय कल भासित की धुनि है ।

रंचक हू बोलत लजत कलकंठी पिक
मोहन वरन मानो झरत सुमन है ।
सोभन भनत भ्रम करत गुनीन चित
नित ही विपंची हित सुख की करन है ।
मति गति जुगति सबै ही विसराय जैहै
राधा माहारनी मृदु बानी भौन सुन है ॥५२॥
कैंधौं गूढ ग्रन्थन को प्रगट करन हार
करत प्रचार नाद वेद कों सह्यार है ।
कैंधौं सुरसप्तन की सोहत है मंजु भूमि
कैंधौं राग रागिन को अम्बुधि अपार है ।
सोभन भनत षटतंत्र की सुतंत्र थल
कैंधौं षट रस कौं अमीसो सरसार है ।
मृदुल मनोज ओज वदन सरोज राजै
रसिक रसीलो तेरो रसना सुढार है ॥५३॥

अथ हसन—

चंद तें अमंद मुख कंज मंजु रच्यो विध
चंपक वरन मन हरन दिखात है ।
कोकनद कोरक समीर धीर विकसित
करत अमित छवि लोचन सुहात है ।
सोभन भनत लट नागन भ्रमर भीर
करत अधीर घोर सौरभ चुरात हैं ।
दाडिम अधर छवि दशन हसन फवि
जब विकसति तब चौंध दृग जात है ॥५४॥
कैंधौं क्षीर सागर तें सरिता प्रवाह कैंधौं
गंग की तरंग गिरी मेरु की शिखर तें ।

कैधौं मंजु हसन लसन सु सरोज मुख
कैधौं मृदु तारावलि राजैं छवि सरतें ।
सोभन भनत कैधौं विज्जु कौ प्रकास मंजु
मुकता विभास कैधौं जोती जुत करतें ।
चंद्रक चमक चंद्र चोंधत चपत जासु
करत विकास जब हसन अधर तें ॥५५॥

अथ नासिका—

क०—कंचन कमल मधि किसुक कुसम चार
करत विहार मानो अतिही ललित है ।
सोभा की सकेल वेल उन्नत सह्यारी भल
हेममय गिरि की सु कंदरा कलित है ।
सोभन भनत कैधौं मंजुल अमोल शुक
चंचु को विभास तिल पुषप फलित है ।
कैधौं मृदु हासिका सु सौरभ विकासिका कि
राधिका को नासिका सु वेसर हलित है ॥५६॥
सौरभ समूह को है अमल विमल गेह
नेह के सदन को सु वातायन दरसाय ।
कैधौं ये मनोज जू के झूलवे कों कंचन को
फूलन कों झूला जाहा निस द्यौस सरसाय ।
सोभन भनत भर मत्त मति जाकु लख
विलख हलत मानो मोतीयुग हरसाय ।
झूम झूम झूमकी झमाके करैं जाहा नित
नासिका की नथनी अकथनी सो दरसाय ॥५७॥

वेसरमुकता:—

वदन सरोज से विमल मद छक छक
पीवत अधर मद मुदित रहत है ।

कभू अलसाय जाय पोंढत कपोलन पें
कभू परयंक निज अंक न धरत है ।
सोभन भनत कभू लोचन गजक जान
पान करिवे कू नित हिये में भरत है ।
प्रीतम के प्रेम में पगो रहै वार वार
वेसर को मोती मनहरवो करत है ॥५८॥

अथ कपोल—

कैंधौं रूप रास में विकास रसराज को है
कैंधों अरविंद माझ मधुप दिखात है ।
कैंधौं मेघ नील हेम सम्पुट सुसंकुरित
अंकुरित कैंधौं तम तड़ित दिखात है ।
सोभन भनत कैंधौं इंदु में कलिंद विंदु
कैंधौं ये कपोल गोल तिल सों सुहात है ।
कैंधौं छवि सरिता में भानुजा को एक कन
कैंधौं श्रीगोविंद गोरे गातन छिगात है ॥५९॥

कैंधौं ये मुदित मैन ऐन की विमल भूमि
कैंधौं नैन युग के नचन को सुथल है ।
कैंधौं रति गति को विमल थान भ्राज मान
राजमान कैंधों रूप आगन अमल है ।
सोभन भनत कैंधौं प्रीतम निहारवे को
विधिने रचो है कोई चेटक चपल है ।
कैंधौं ये अमोल गोल गोल से कपोल मंजु
बने है सुडौल त्यों अमोल लौन झलकै है ॥६०॥

दामिनी सी दमक चमक चारु चांदनी सी
झीने झीने घूँघट झमक झमको करें ।

कंज मुख मंजुल जड़ाव जड़े भूषनन
तरुन तरोना श्रौणि छवि छलको करें ।
सोभन भनत भौर भीर भरमत मानों
अलक लटक चूम चूम चिलको करें ।
गोल गोल आरसो से अमल कपोल पर
पीतम के नैन डोल डोल तिलको करें ।।६१।।

अथ श्रवण—

पीय गुन गाहक हैं मैन केलि चाहक हैं
मृदु बैन वाहक हैं प्रेम में पगे रहें ।
नेह नव नाहक हैं सम सुर गाहक हैं
कौतुक समाहक हैं लाग में लगे रहें ।
सोभन भनत हाव भाव के विभावक हैं
जगर मगर आभरन उमगे रहें ।
श्रौन सुख सालक हैं मोमन के पालक हैं
मानो सीप वालक हैं मुकता लगे रहें ।।६२।।

रतन जटित जगमग जुगनू सी जोत
अमित दिपत दुति भूषन विमल की ।
मंजु मंजु मोहित है मनोज को मन चारु
अति ही सह्मार धारें कलिका कमल की ।
सोभन भनत रवि शशि के युगल चक्र
वक्र गति चलति ललित झलमल की ।
कर्णफूल धारे युग मीनन सम्हारें श्रौन
सोभित तिहारें प्यारी वालावली भलकी ।।६३।।

लोचन—

सरसे सरोज से कुरंग सिसु खंजन से
अंजन अंजित नित चित कूहरत है ।
रूप मतवारे पति मति के हरन हारे
अति अनयारे कंज कोरक लजत है ।
सोभन भनत मीन मदन मरोर वारे
सोभित सुधा से सतनारे सरसत है ।
कज्जल सिजल धारैं अमीरस वस वारे
ऐसे है तिहारे वारे नैन दरसत है ।।६४।।
मीन है कि मधुप प्रवीन है कि मंजु नव
कमल नवीन है कि पंचवान पैनों सो ।
मृग है कि मादक कि खंजन चकोर है कि
अंजन कि कोर है कि रूप रस देनो सो ।
सोभन भनत चारु चपला चपल है कि
नेह की ललक है कि सुभग सुखेनों सो ।
छवि की झलक है कि पाटल पटल है कि
सोरभ छलक कि त्रिवेनी दृग दैनो सो ।।६५।।

तारे—

फटिक मनी के नीके सम्पुट वनाय आय
गोविंद लुकाय आज सोवत अनोखों सो ।
कोरक कुमुद माझ मधुप सुभग कैंधौं
छवि के सरोवर में तामरस चोखों सो ।
सोभन भनत कैंधौं सलिल सरोवर में-
मीन युग भ्रमत नचत रस पोखों सो ।
कैंधौं यह प्यारी लोल लोचनन तारे मन
मोहन करन हारे अमीरस धोखों सो ।।६६।।

कटाक्ष—

तारे दोऊ वरुनी विचारे उपमा री यह
पलक मियान कढ़ देत द्युति भारी सी ।
काजर सों माज साज सजत सलौने सैन
मैंन भयकारी त्यौं कटाक्ष चोट मारी सी ।
सोभन भनत गति मति सब हारी पिय
ढारी रूप पानिप कुटिल अनयारी सी ।
कारीगर काम नें सम्हारी रच पच प्यारी
अखिया तिहारी लगे रूप की कटारी सी ॥६७॥

कंज मुख ऊपर मृदुल घुँघराले वार
करत विहार मानो चंचरीक माते है ।
कुटिल कमान वंक भृकुटी सु जान तान
सान धर धर वाँन वेधत अँदा सें है ।
सोभन भनत रति पति मति भरमति
काढे ना कढति निसि द्यौस कसकाते है ।
कारक विथा के नैन मारक कटाक्षन के
छटाके मधुवाँ के त्यों अमी से सरसाते हैं ॥६८॥

लाज भरी आलस गुमान भरो दूना दून
दुति धरी जोबन त्यों जमाक जमाकी है ।
झीने पट झाँकत झुकत झुक झूम झूम
झपत झपक झिझकत सुषमाकी है ।
सोभन भनत ये मनोज ओज दायक हैं
नेह नव सायक कमल उपमा की है ।
काजर की कोर युग तौ कहूँ पड़ी है उर
आन ये अड़ो है नाय टरत घमा की है ॥६९॥

नेत्र तिल—

आनन अनूप रूप भक्त सरूप काम
घुँघट जमन का में कौतुक करत है ।
चपल कुरंग की सी चौकड़ी भरत नित
कंबुक तुरंग की सी चालन चलत है ।
सोभन भनत मृग लोचनी के लोचनन
असित बरन तिल मंजुल दिखत है ।
ताको ही निहार लाल मोहन निहाल होत
ख्याल ही सें मानो इंद्र जाल में पड़त है ॥७०॥

वरुनी—

कैंधौं रूप सरकी सु कोमल मृदुल दूव
खूब छवि देत हेत प्रेम सौ सुसरसी ।
कैंधौं नेह अम्बुधि के युगल किनार माझ
कोमल सिवार तार वाड सजी वरसी ।
सोभन भनत कैंधौं पंकज सु कोरक में
अंजन किनार कैंधौं शोभा आप दरसी ।
कैंधौं पिकवैनी के अनीले युग लोचनन
वरुनी ललित नित मान मोद करसी ॥७१॥

भ्रकुटी—

कैंधौं मृदु पंकज विकास को विभास लख
मधुपन पाँती मद माती सजै भाय भाय ।
कैंधौं सुधाकरको कुमोदिनी विकास लख
पान आन करत पिपीलका सु धाय धाय ।
सोभन भनत नव कंचन मुकुर मंजु
काम की कला सी विकला सी लसैं आय आय ।

कैंधौं लोल लोचन पें ललित लवंगलता
कैंधौं यें भ्रकुटी ललित रही छाय छाय ॥७२॥

अथ भाल—

कैंधौं प्रेम वारिध को उज्ज्वल सुथल भल
कैंधौं ये विमल पारिजात को सुपात है ।
कैंधौं मृदु कंचन को कोमल सहेट नट
काम को अखेट थान अमल सुहात है ।
सोभन भनत मंत्र तंत्र को सुभग गेह
नेह को सरस भौन भ्रम को वगात है ।
कैंधौं शशी खंड कों अखंड भाल राधिका कौ
वदन विभास लख लोवन चुरात है ॥७३॥

अथ लट—

कैंधौं ये निशेस में फनेस के विराजै सिशु
कैंधौं ये असित रेख सजित दरेरो है ।
कैंधौं नव अम्वुज विराजत भ्रमर भीर
अमित सुहात काम अंकुस करेरो है ।
सोभन भनत रूप सर में सिवार तार
मोहन भमन में कवन्द कैंधौं गेरो है ।
कैंधौं पुखराज ये असिक्त अहि छोना यह
कैंधौं लट लटक हरत मन मेरो है ॥७४॥

अथ पाटी—

कर कर जतन रतन मनि मानिकन
स्वेत स्वेत फूलन सजो सो नित हीं रहै ।
सौंधे से सनेह डार नित ही सह्यार चार
गुहि गहि वार अहि फन सी फवी रहै ।

मेरी जान ललित सुजान प्यारी पटिया है
छतियाँ करत सुख सौरभ लसी रहै ।
... ...
... ... ॥७५॥

केश—

मृदुल मृणाल तार तार सें वहार दार
अतिहि सुढार है शोरिस ओ शिवार सें ।
मंजुल विमल भल कोमल सनेह उरे
मखतूल तार सें सरस है वहार सें ।
सोभन भनत चारु रेसम सरम जात
नाग हूँ लजात गात सुभग सम्हारे सें ।
देखों वार वार चित चोरें मेरौ वार वार
जाऊ वलहार प्यारी तेरे वार वार सें ॥७६॥
धुले है खिले है जाय जंघन परे है मंजु
मृदुल खुले है सुभ सौरभ सुहात है ।
तम सें तमक अति तामरस सरमत
रति पति भरमत भ्रमर लजात है ।
सोभन भनत लीलमनीहूँ लजात नाग
कारेहूं चपात निसि कुहू त्यों दुरात है ।
कमल सुवेस वारे सुरभी सनेह डारे
वार वार प्रीतम सम्हारे निज हात है ॥

अथ मांग—

प्यारी को मयंक मुख अंक मानी सुसमा को
दुरत मयंक वांके लोचन चकोर सें ।

ता पर ललित श्याम काम की कला सी मंजु
पटिया कलित छवि छाजत सुकोर सें ।
सोभन भनत भानु करसी कुसुम सोये
माँग की भरन मनहरन मोरोर सें ।
मानो मंजु विधि जाकीं धार वार वार वेध
पन्नगी मिलन आज जात कर जोर सें ॥७७॥

जूड़ो—

कोटिन कुमुद कंज चंपक कलाधर सी
कमला कनक छवि लजित वदन आय ।
मानों विधि उदधि सरूप निधि मथि मथि
काढो है अनूप ये सुधाकर सों हरखाय ।
सोभन भनत भयो विमल विभास तातें
चकित चपत तम फिरत लुकत धाय ।
सुथल न पाय आय जूटक सरूप मांय
वसन लुकाय जाय छियो है कै दुराय ॥७८॥

वैनी—

तमतूल तामरस अतसी कुसुम नव
श्याम घन पर न तमाल तिल की सी है ।
मानो हेममनिन वनी है नव भूमि पर
पन्नगी वधूटी नित करत गतीसी है ।
सोभन भनत कैधौं भोर वौर आन लगे
सौरभ सनेह पगी नीलम लड़ी सी है ।
वैनी सुख दैनी वर नैनी सीस सरसाय
हरखाय मानो पद पूजन चलीसी है ॥७९॥

मुथरे सम्हारे वार कोमल शिवार हूं तें
रविजा विहार मानो सुभग सुहात है ।
मुकता कनक तार तारन तरल तैसे
करत विलास मानौ गंग गुन गात है ।
सोभन भनत मंजु कुसुम अरुन गुहे
पुहे गुन सारदा सुभग दरसात है ।
कैधौं मृगनैनी वर वैनी तिरवैनी वन
वसुधा सुधा सौं नित हित वरसात है ॥८०॥

अथ सव्वांग—

चंपक वरन अंग जोवन उमंग भरो
सौरभ तरंग अंग अंग सों सरसाय ।
उन्नत उरोज तंग कंचुकी सुढार नाभी
वापी सरवर की अनंग दयुती सरसाय ।
सोभन भनत मुखचंद कंजतें स्वच्छन्द
मंद मंद चलत गयंद वृंद सरसाय ।
भृकुटी कमान नैन वानन कौ तान प्रान
वेधत सुजान मुसक्यान मान वरसाय ॥८१॥

सुगंध मलिन्द मंजु मंजरी सरोज की सै
सौगुनौ विभास जाहा होत सुसमा को है ।
चंपक चमेली चार मोगरा निवारी नव
केतकी कमलकुल केवड़ा कुजा को है ।
सोभन भनत मधु माधवी मनोजलता
मोतिया गुलाव ताव कहा उपमा को है ।
मोहन की मोहनी अतर तर काहा सम
जाकी तौ सुगंध गंध गंवन धुवा को है ॥८२॥

चरन धरत भूमि देत द्रुम फूल झूम
तोउ लूम लूम जात पाखुरोन गढजाय ।
नवल सहेली हात सुमन कमल देत
लेत ही मुरत कर कोमल सो दरसाय ।
सोभन भनत सुकुमार चारु अंगन में
भारके डरन मृगमद रंग धरषाय ।
जो पैं कभूं चले तो पैं सुख रुख ढलैं तल
तलफ तलफ परै मैन तूल गढजाय ॥८३-८४॥

दो०—श्रीराधा वृषभानुजा नख सिख तुमरो आज ।
यथा सक्ति वरनों कछु त्याग जगत भय लाज ॥८५॥

हँसो भलें सठ विलख मोमति गति दुर्वल देख ।
सज हि येहरखो सदा जिन हित रचित सुलेख ॥८६॥

इति नख शिख समाप्त ॥

हूँ तो एक पापी सोसुरापी नाय जग्य जापी
तिनकहूँ चाखी विंदु यमुना के तीर को ।
ताही समें भीरु सै भये है सव यमदूत
पूत भयो देह गयो पीड़ा भव पोर की ।
सोभन भनत भाग्य जाके को वड़ाई कहा
करो भयो चार भुज सोभा पीत चीर को ।
उर माल धारी विष्नुजन संग चलो वैठ
वार वार लेत वलिहारो वोर जोर की ॥१॥

यमुना के तीर भीर देखी वहु एक दिन
देवन को गयो तहाँ होहूँ अति छकौ सौ ।

देखों तहाँ जाय पाय परत विरंचि विधि
इंद्र औ कुवेर वेर वेर हो थकौ सो ।
सोभन भनत चारु भुज वनमाल धारी
कहै चार जनते पुकार जिन वकौ सो ।
छोड़ देऊ दूत और भूत अवधूत सव
पूत भयो मे तो वेग जाओ जम जकौ सो ॥२॥
जग्य जप तप होम विविमौन गौन वहु
तीरथ को करि करि जहाँ जहाँ भट को ।
भजन विराग लाग रहै निसि वासर औ
सेवन करत चित काहू में ना अट को ।
सोभन भनत भाव भक्तन सैं कीया जाय
हाय हाय माय जी पुजाय जिन पट कौ ।
कियो श्रम वहू सव करवोहि वृथा जग
जिन आय धाय जल जमुना न गट को ॥३॥
जमदूत जाय जम जाजमपैं जम जांघ
दाव दाव वात अेक वोलो यह जम सौं ।
अहो महाराज नाराज नहिं होओ जो पै
देओ विदा आज भाज जाय या नगर सों ।
जमुना जगमाय जोर सोर कियो पापी न्हाय
न्हाय विष्नु लोक कू पधारो अति धज सौं ।
वंद करो नरक सो नोकर निकार कार-
वार छोड़ छाड़ के फिराद करो हरि सौं ॥४॥

अथ शिखरिणी—

वजै वंसो भारी युवति मनहारी निशन में ।
चले क्यों ना प्यारी निखिल दुःखहारी सरन में ॥

अरी वो है कारी ललित गिरधारी भवन में ।
अभी तू है वारी नवरस विहारी विपिन में ॥२॥
क०—रुचिर विताना तरे गाना गुनीताना करै
सुनकै सुताना सुन प्यारे सैं लगात है ।
सोहन वखाना मन मोहन को रूप नाना
कविन सुधाना नेंस माना सो दिखात है ।
दुजराज सुरराज नरन के आज राज
करत समाज आलो रंग वरसात है ।
कैसे कर जाऊं देख पाऊं सो में कैसे सखी
चाँदनो चमक चितौन हि चुव जात है ॥२॥

सवैया

कोई आन लखी सुसखो ग्रह माहि सो वोलत वैन अचैन सो सूखै ।
किहि कारन भावन आये न हाये कहो जव वातें चलों सव कूखै ।
मन ही मन मांहि सिहाय कहातू कहै कवि हाय करै जो सो दूःखै ।
यह प्रेम में माती अग्हातो कहा कहि कारन वार निचोरत सूखै ॥३
वृज आमन भामन कोनौ तवै जव अस्त गिरो पहुचो रवि विम्वू ।
मग माय सवै परसे पग आह विरंच सुरेंद्र नरेंद्र सु सिवू ।
तव वाजै सु साजै सवै मिल के किलकै हरणो धरणी नगयिवू ।
वन सें अव आमन गाय लिये मग गावत कान उछारत निवू ॥४॥

श्री हरि अथ समस्या पूर्ति समाप्त ॥

॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

क०—चंदन की चौकी पर चपलासो चंदमुखा
वैठो अनाहन कौं कमला छवि लूटि लूटि ।
दासोजन अंगन में मज्जन मुदित देत
कंज से कपोलन पै अलकावलि छूट छूट ।

कंचन के कुम्भन में भरै धरै स्वच्छ नीर
सोभन जू डारत समीर गंध घूट घूट ।
पौछत शरीर स्वेत वसन दसन कांति
सुंदर सुरूप साटो कासे परै फूट फूट ॥१॥

सवैया—

खंजन नैनन अंजन देतन मंजन अंगन माहि लगावै ।
खेलन केलि सहेलिन सों अलवेली अकेली हवेली सुहावै ।
सोभन नांहि वियोग वती पति और तिया संग नाहि लुभावै ।
काहै उदास न हासवती जिय स्वास को त्रास हमें न वतावै ॥२॥
वह स्याम सुजान लखे जवतें तवतें हमें चाव वढो है घना ।
दिन रैंन ऊछांह सो छायो रहै दुति गात दियात सनेह सना ।
कवि सोभन मोमन मूरत वो मृदु वोलन वोलन भाव वना ।
मुसक्यान औ कानलों नैंननकी फिर कान से प्रान अजान ठना ॥३

क०—चलो क्यों ना कान्ह अपरान हू वितीत भयो
खोले प्यारी लटा अटा छटा सी खिले गई ।
आई ही नवीन सो प्रवीन वीन लिये हाथ
नाई कोइ साथ आज लाज से वुलै गई ।
भलो भलो चलो धाय आये वृज मांहि ताहि
देख हरसाय सो मनोज आज लैगई ।
अंजर से चंचर चितौन चोर भेज के
चटाक चित चोर के पटाक पर देगई ॥४॥

सवैया—

गौने के लेन को आये सुजान ये प्राण पियारे सुनी सव कोई ।
मात पितान को स्नेह वढ़ौ तिनें छाड़त में दुख मानत सोई ।
सोभन प्यारी सहेली सवैं मिलि व्याकुल वाल विहाल सी होई ।
छोटी वड़ी सव रोने लगी विंदिया तव नैन के नीर से धोई ॥१॥

क०—उदित निसेस देख सेससो सु स्वेत मुख
काम सों कपात गात हेम सो लखत है ।
प्यारो है प्रवास तातें छुटो सव आस दूर
गये सव हास स्वास ग्रीसम जरत है ।
भये जो रोमांच सीतकार क्षण माहि करे
चक से चले जे धार वरषा वरसत है ।
सोभन कवि मोहन प्यारी वल्लभाके देखो
विरह तें षट ऋतु अंग दरसत है ॥२॥

सवैया—

चील तू झील करें सुख सिधु कू वीर कहा अव वोलत डोलै ।
सिधु गोविद हरी तनया अनया यसोजान जियें मत डोलै ।
हंस प्रसंस कहौ यदुवंस में कंस कौ वैरी कहाँ अव डोलै ।
प्रेम वैचेती में चारों दिशा वर वारी सवै वर ढुड़त डोलै ॥३॥

वेद में हैरौ औ शास्त्र पुरानन भेद न पायो मनुस्मृति मायन ।
पूछो घनौ गुनी लोगन सें दुज देव औ देवन तें वहु भायन ।
ढुडो व देखो सुनों न कहूँ यह सोभन रूप वतायो न चायन ।
भाग वड़ेन सें पायो हमें हरि कुंज में दावत राधिका पायन ॥४॥

क०—प्यारे है प्रवास पास आये वहु भाग से
प्रान पति विपति निवारन मो छोटी के ।
कोटि कोटि जतनन दिन को विताय पुनि
सुंदर सदन साज वैठी संग जोटी के ।
सोभन कवि प्राणपति संग में विराज साज
मैन सैन चैन नाय देत मन मोटी के ।
केल की कहानोको कथान के सुभाखत ही
खोटो करन लगौ ये पखेरू लाल चोटी के ॥५॥

प्रीत पर कोटा में सम्हारो प्यारी प्रेम पुर
प्रणय परजंक पै विराजी आज खासी है ।
प्रीतम सनेह मित्र मंत्री वनाय और
चाह चार चारु गुन करत प्रकासी है ।
सोभन भनत वुद्ध विनय विवेक आदि
रूप खड भूप जासु करत खवासी है ।
नर्म्म निज नौकर वनाय चाव चोवदार
के हेत पुकार राधा नाम सुख रासी है ॥६॥

वरवा—वंसी वंसीधर को वंसी जान ।
सुनत मधुर सी लागे वेधत प्रान ॥७॥

क०—सुनिये सुजान प्यारी रूप है अनूप तेरो
मुख की प्रभा तें प्रभाकर हूँ लजात है ।
सोभन सदन की शिखर पै सयानी आज
हों ही चढ़ देखों तोयसखि ना दिखात है ।
तेरो नाँय काज है अकाज लग हैरी दोष
घाष नव वाल सव छाँतन चढात है ।
देखकें वदन तेरो मानकें मयंक मन
दोये ते अरघ के अकाल पड़ जात है ॥१॥

सवैया—

नैनन नीर मसी सें लिखो हग द्वात वनाय मगाय समाजै ।
लेखनो लोयन को करकें अरु प्रीत के पत्र पवित्रन छाजै ।
यातें मया तें मयंक मुखी तुम पास के भेजन को यह काजै ।
दीठ तें दीठ न जोडो कभु खत दोठ मिला तनकी जोहों लाजै ।
खंजन नैनन अंजन देत न मज्जन अंगन माहि लगावे ।
खेलन केलि सहेलिन सों अलवेलो हवेलो अकेलो सुहावे ।

सोभन नाहिं वियोग वती पति और तिया संग नाहि लुभावे ।
काहे उदास न हासवती यह स्वास कौ त्रास हमें ना वतावे ॥३॥
कभी कालिंदी कूल कदम्व तले तुम कान्ह कहा नीत गैवे करो।
वह गोधन गोपन संग गुपाल गुमान को गासी न दैवे करौ ।
सुख सों सुनौ सुंदर सामरे जू कवि सोभन सोतै जरेवे करौ ।
विन दाम की दासी पै दीन दयाल दया करके कवू ऐवै करौ ॥४॥
धुई परजंक पै अंक मैं श्याम को दैके निसंक सी आज में सोइ ।
सोई भयो नभचंद उदय नद नंद अमद की मूरत जोई ।
जोईवे मैन के वैन चले इतने में अचैन पुकारो सो कोई ।
कोई न देख मैं रोई सखी विंदिया तव नैनन के नीर से धोई ॥५॥
आज नवेली तू खेली कहाँ अलवेली गुमान को वात हू खोई ।
नाह की प्रीत विना ही लखे किह कारण आपही जायके सोई ।
नेह कौ नातो निकार के सोभन आनते मान की सान सों जोई।
रोये कहा अव होत हैरी विंदिया तव नैन के नीर सौं धौई ॥६॥

क०—सार चार वेद को विचार वार वार देखो
पेखोना सुजान अव कैसे अनुमानी ये ।
शास्त्र षट माझ हू विलोको नहिं जासु भेद
खेद मन मैंटवे को कैसे के प्रमानो ये ।
अष्टादश व्यास के पुरान में न जान पायो
सोभन वतायो वृज मंडल पेचानि ये ।
राधिकारमणलाल जू कौ जिय ध्यान सोई
गुह्य हूँ ते गुह्य अति गुह्य तातें जानिये ॥७॥

अथ समस्या पूर्त्तीः—

भारत विमल वर वसुधा विराजमान
छाजमान द्वीपन में जाकी सु जलूस है ।

गावत प्रताप जासु वेद औं पुरान आदि
तीरथ निकर जाहा राजत वहुस है ।
सोभन भनत और देस के नरेस सव
सुभग प्रभाव लख होय जात हूस है ।
कावुल विकल रूम धूम सी मनावे और
इटली लजावें रोम मोम रूस फूस है ॥१॥

देखत प्रताप ताप होत कांप जात पाप
ब्रटिस दिनेश या नरेस की जलूस है ।
चीन छीन दीन नित होत है प्रवीन इनें
लखकें जपान खान पान तजे हूस है ।
सोभन भनत रूप चूमत चरण भूमि
सरमा सो वरमा विलायत प्रभूस है ।
अरव खरव और कावुल व ग्रीस खीस
इटली अधीस रोम मोम रूस फूस है ॥२॥

सुखद सिंगार सो सम्हार वार वार आली
ये कराली आय आज वैठो निज मंद्रमा ।
हीरन के हार सुखमार कै विहार करें
मानों नगमनि अनी चमके गिरि कंद्रमा ।
नख सो सुसिख देखो कैसी हि वनी है आजु
सोभन भनत देख आय जात तंद्रमा ।
कालीजो के कज्जल की लुलित लुनाई छाई
सारे नभ मंडल में भारगव चंद्रमा ॥३॥

विमल नितम्व कुच विव साटिका सो छन्न
मान भरी प्यारी आज वैठी निज मंद्रमा ।

अहो वनमाली सुन आलो ताय एक चख
लख के विमन मन फेलि गई तंद्रमा ।
विगत विराग तातें उदै अनुराग भयो
सोभन कवि कृष्ण रूप लुको रक्त रंध्रमा ।
कालीजी के कज्जल की लुलित लुनाई छाई
मानो नभ मंडल में ऊगो नव चंद्रमा ॥४॥
मास चैत्र माह चित्त चतुरन चाह कीयो
लीयो सुख सार तुम्हें लाय निज मंद्रमा ।
गिलिम गलीचा को विछाय लाय हांडी झाड
मजलस मनोहर वनाई तिहि अंद्रमा ।
वड़े ही विद्वान गुनमान तहाँ वैठे आय
तिया को स्वरूप देख छाय गयी तंद्रमा ।
सोभन है सभामाय वोले कवि मुसक्याय
तेरो मुख देखे आली फीको लगे चंद्रमा ॥५॥
पढ पढ अनेक ग्रन्थ राचे अमित पंथ
लेके है अनन्त सुख किये संग वाम को ।
व्रत जप तप आदि तीरथन गयो भाज
एसे ही अकाज तिन घिसो निज चामको ।
जाकी ही कृपा तें मूढ सोभन स्वरूप पायो
ताको नहिं धायो भनें भूपजन दामको ।
लाजत सुरत काम ललित त्रिभंगी श्याम
राम को न जानें ताको जानिये हराम को ॥६॥
कौशलेस नाम तें कलंक कुल दूर होत
पापन को धूर होत पूर होत काम को ।
सीतापति कहे ते विपति सव चूर होत
जग में मसूर होत चेरो वलस्याम को ।

सोभन सहूर होत जोत हू हजूर होत
कूर कर पूर होत ग्रह गुन ग्राम को ।
भक्तन में सूर होत जिनको कृपार्ते एसे
रामको न जाने ताको जानिये हराम को ॥७॥

ऐरी वीर कौन पीर परुस प्रकास करो
उदित उसास त्रास प्रानन की भाखे है ।
पाहन कठोर कुच कसक न सही जाय
कट लचकाय हूक उठत सु काखें है ।
सोभन भनत चित्त चंचल चलाय मान
रहे चख चारु चल अंचल ते झाखें है ।
तू है अजानी वाल ज्वानी को न जाने ख्याल
मदन महीप की दिखात लगी आखें है ॥८॥

सवैया—

कर कंजन कंचन कंकन है कुच कुम्भन कंचुकी कामिन के ।
कच कोमल केल कपोलन पै करैं कौन कह सकें भामिन के ।
कल किंकिणि कूजन सो कटि में कछू कानन कांति सुहामिन के।
कलकठ पै कम्बु से वार दिये कवि सोभन कीरत दामिन के ॥९॥

क०—साँझ ही समें व्रज रमण देव मन्दिर में
सुंदर विराजे होत आनंद की वरसा ।
सात कुम्भ कुम्भन सों सोभन अभिसेक भयो
वेद धुनी छयो वेदि मंड़प सु सरसा ।
साम श्रुत सामने पढे है सील साधुजन
विपिन सुख सागर छायो गई धरसा ।
सामरी सयानी सवै साम सौज हातन में
सामरे सलोने को खवासी करें हरसा ॥१०॥

चरन धरत भूमि झूमि द्रुम देत फूल
हंस मद कह होत लखि मृदु गौन के ।
मुख चंद प्रति ही अमंद सुखकंद देखि
कंज पुंज लाजें पिक बोल सुन लौन के ।
सोभन भनत नाभी वापी सम देखि देखि
मोहित से होत मौनो व्रत तजि मौन के ।
जोगी ऋषि मुनी देखि जोग जप तप भूलें
तोसी उरवसी उरवसी नाहीं कौन के ॥११॥
छाँड़ कै कुसंग सतसंग रंग अंग करु
यमुना तरंगन की सीतलता लहरे ।
समता विचार प्यार ममता न करु कहूँ
वनता औ जनता की तापको न सहरे ।
सोभन भनत वृंदावन की निकुंजन में
शिलीमुख गुंजन में हरीनाम कहरे ।
चाहें यश करन और सुख जे घरु के तोर
राधिका रमण की सरण मन गहरे ॥१२॥
श्रीश औ गिरीस शेष गनपत गणेश रु
धामेश्वर आवें प्रभु गुण गण गावते ।
भनत कवीन्द्र आय श्यामा श्याम जू के पावें
नवल दरस रस रंग वरसावते ।
कर कर कंज पुंज भेट में धरत लाय
विमल किरीट कोटि पायन लगावते ।
रास रस गाय गाय नाथ को रिझाय और
जग पति आयुस सों धामन को धावते ॥१३॥

चित्रकाव्य कविनामनि कसन को—

आली आज एक ऋतुराज के समागम में
श्रोवन निकुंजन में कौतुक अनैठो है ।
ललित सखीन संग जात हो उमंग भरी
प्यारी रूप देखकें अनंग कन अठो है ।
सोभन भनत तहाँ प्रीतम प्रवीन मिले
होय के मुदित श्याम श्याम मन पैंठो है ।
बोलें तुमे चंदमुखी अवै वेग जाओ सुन
परम सुजान काह्ह मान कर वैठो है ॥१४॥
प्यारे ओर प्यारी दोउ शशी उजियारो मांह
केल की कथारी कछू भाकत अनैठो है ।
दै दै कर तारी सव गोपवनतारी हँसी
कीरत कुमारी सुन भृकुटी अमेंठो है ।
तव वनवारी ताय लखकें गुसारी पग
करत मनारी कर पकरत अेठो है ।
जव गुन खान दूजो जतनन जान आन
परम सुजान काह्ह मान कर वैठो है ॥१५॥
वंदे ब्रजेस मथुरेस द्वारकेस केस
चरन सरोज युग मच्युत मुरारे है ।
गोपीनाथ गोकुलेस गोपीपति गोपप्राण
वृंदावन नायक सुसख्य दनुजारे है ।
राधिकारमण नाथ राधाप्रिय राधाकांत
क्रोधित-कृतांत मुख नासिक अघारे है ।
सोभनो मनुज अहमति खलु पाप कृत्
पाहि पाहि नंद सुत नासित सुरारे है ॥१॥

वंदेत महेसो शेसो गोकुलेसो मनुजेसो
चरण सरोजे तव निश्चित सुभावाये ।
वृंदावन नाथ व्रजभूमि सु विभांति सदा
गोप गोपिकासु प्रेम भक्ति युत भावाये ।
मृदुल त्रणालि मुख विधृता गत्रालि सह
माधव मिलति तासु मृग मंजु शावाये ।
सोभनो भणति विलसतु सदा राधा प्राण
केलि कौमुदो रेष राजत सु भावाये ।२॥

होली:—

एरी सखी चलो निरख वै कू
चलै जुव दोऊ श्यामा श्याम के फाग कूँ ॥
इत होली खेलन चली लली सखीन के संग ।
उततें ग्वाल बाल संग ले चले श्याम त्रभंग ॥
स्याम सखान युत निकस हि डारत नव नव रंग ॥१॥
शीश फूल और चंद्रिका वैना वंदि अनूप ।
सौ धारी लढ नागनो सेवत मनु मुख धूप ॥२॥
रुचिर कपोलन पैं वनो मृगमद खोर सु हीर ।
जड़ित विंदु मुख इंदु पैं चोवा चरिचित्त चीर ॥३॥
अनियारी भृकुटि कसैं लसैं दृगन सर ओर ।
अंजन रंजन सी लगैं पलक पक्ति की कोर ॥४॥
माँग भरी सिंदूर सौं मुक्ता लड़ि लगाय ।
कसी वेंनि मृगनैनि की वसी लाल उर माल ॥४॥
मुक्ता लटकै झुमकी नथनी भलका-दार ।
वनी नासिका मूल में स्याम भाल सुकुमार ॥५॥

द्विज पंक्तिन में अति लसी मसी वीडिन साथ ।
मृदु पल्लव सम अधर युग मनु अनुराग दिखाथ ॥६॥
करनफूल युग करन में पर न जड़े पुखराज ।
भूमें जिम रस प्रेम से संतत रसिक समाज ॥७॥
वार घुँघरारि वनी पिपर पात सुहात ।
वाला वाला करन में कटि तनक सो दिखात ॥८॥
चमकें बेंदी चिवुक में चहत चितौन चुराय ।
करौ चतुर ब्रज चद को चाकर चमक दिखाय ॥९॥
गुलीवंद गहनो फवौ ग्रीवा माँय नवीन ।
जड़ित पाटिया अति लसैं जुगनो मीना कीन ॥१०॥
हार हीर जो माल अरु चंपकलो वहुभाँत ।
पंचलडो सतलडो अति राजत मृद मृद गात ॥११॥
युगल कुचन पर कंचुको पचरंगी रिझवार ।
कसी लसी झीनो वसी चित प्यारे रससार ॥१२॥
चौवा चरिचित चुँदरा अंचल चंचल व्यार ।
रुरें इत उत छिपैं दुरै सकुच कछुक चितनार ॥१३॥
चौलो चौकस अति वनी तनी तनी सुखदेत ।
वांहन पैं चोखी वनी पोत किनारी स्वेत ॥१४॥
वाजूबंद विराज हीं फौंदा लटकें लाल ।
खटकै पनन चूरियां सुन सुन मटकें वाल ॥१५॥
कंकण पोंचो कर नये अँगुलिन छल्ला छाप ।
चंद्र विव सम आरसी लख भूलें ऋषि जाप ॥१६॥
छन्न पछेलो गुजरी अरु हतफूल सुहात ।
जड़े अँगुठिन में दीपैं मानिक हीर दिखात ॥१७॥
कटि किंकनी लटकै रुचिर सारी केसर रंग ।
लसैं कोनारो मौतिया दामन घेर सु ढंग ॥१८॥

नूपुर नित निरतत रहै नवल चरण के माँय ।
कंकण कल कूजित करैं कवुक कवुक हरषाय ॥१९॥
छडा छविलैकैं लसैं विछुआ अंगुलि ओर ।
जव ही चलै प्यारी तव राजहंस करत सोर ॥२०॥
लट पच पेंच रुचिर रुचिर पाग पोत मोर ।
मुकट लटक अति रुचि वँधे कसौं दमकत चंद करोर । २१॥
घुँघरारी अलकन पडी सों धारो मृदु तेल ।
चमकत चंचल जिम उरग वधू करत मृदुकेल ॥२२॥
दमकत बेंदी भाल पर चमकत केसर खोर ।
लमकत वेसर रस करन छमकत मुन रस वोर ॥२३॥
मुक्ता झूमत अति रुचिर सुभग नासिका माँय ।
मनु उड कीर अधर मति उडगन चुगत सीहाँय ॥२४॥
कानन वारी लसत हैं वनवारी के ओर ।
मुक्तन के कुंडल जडै दिपत सुनैंरी कोर ॥२५॥
लसत निस्क मुक्तावली मली छली के ग्रीव ।
मनु घन तन में थिर भई वककुल पंक्ति सजीव ॥२६॥
केसरीया वागो वनो वनत कीनारी स्वेत ।
कछनी कैं उरंग की सु तन तनछवि देत ॥२७॥
गुँजमाल वनमाल अरु हीरहार झमकात ।
इंद्रधनुष रविकर सहित दामन मनु घनगात ॥२८॥
लाल पणन सो जो जड़े कुंदन महक सुहात ।
वाजूवंद वने सुगढ़ नंदनदन के हात ॥२९॥
जड़े हीर पुखराज सौ कंकण करके माँय ।
लसत अंगुरन मुद्रिका कटि किंकिणी सुहाय ॥३०॥
कटि फेंटा में फव रही वंसी वंस प्रसंस ।
जित धुनि सुन छिन मह भयो व्रजवनिता कुलध्वंस ॥३१॥

नूपुर कंकण पगन में करत मधुर झनकार ।
मनु सरोज मधुमत्त अलि भनत प्रगट सुक सार ॥३२॥
लाल गुलालन झोलियाँ लाल लोयें रुमाल ।
वाल माल अरु ग्वालहु सव लिये पीत गुलाल ॥३३॥
लियें अवीर अहोरिनी कंचन थालन साथ ।
कुंकुम मद केसर कलस कर सरक नहीं जात ॥३४॥
प्यारी कर कमलन लसें हेम पिचक वहु मोल ।
ललिता लोज कपोल संग लियें ललित रंग घोल ॥३५॥
अवलादिक सव संग लियें सुभग सुगंधी रंग ।
चोवा चंदन कुमकुमा वने सवैं इक ढंग ॥३६॥
गारी गावत परसपर झाँज पनव ढ़म ढोल ।
वीन मृदंग उपंभ अरु चंग वजत वहु वोल ॥३७॥
ढ़भ रापें स्रगुरी फिरि मंडुर फरीसर ओर ।
विफरी नागाज अवन पर तरक तरक कर जोर ॥३८॥
मुरज रुंज आवज वजें रचें इतै सव नार ।
अलगोजा मुरली मधुर घन गावत सव ग्वार ॥३९॥
सैनाई संगीत अरु सिंगा मुख ताल गीत ।
सुन सुन तरसत सव सखी प्यारी होत अभीत ॥४०॥
जड़ित पन्ना के हैं भरे केसर मृगमद रंग ।
स्फाटिक भाजन माँह अरु अवीर गुलाल सुभंग ॥४१॥
होरी खेलत परसपर गोरी अरु नंद लाल ।
झक झोरी अति ह्वै रही झोरिन उड़त गुलाल ॥४२॥
मारत पिचकारि झक रहित ठिटक ठिटक कोउ जात ।
सिसक सिसक मन हिचक कै सिंचत रंग सौ गात ॥४३॥
ग्वाल कटोरन में भरी मृगमद रंग नवीन ।
प्यारी पर डारी जवै तवै स्याम दुति कीन ॥५४॥

इत गोपीन नें गेह लयो उत पिचकारो नंदलाल ।
वोर रंग सों सब मलो गालन लाल गुलाल ॥४५॥

बजत मुखन मोह चंग इत उत हि सजत पुन वाल ।
खिजत इतें सब ग्वाल उत नचवत जवें गोपाल ॥४६॥

हो हो होरी जब कहैं गोरिन सो नंदलाल ।
हो हो कर तब सखा सब फेंकत अबीर गुलाल ॥४७॥

सुबल तोक श्रीदाम अरु मधुमंगल मधुमाल ।
रोरी झोरिन सों कियो भूतल नभ सब लाल ॥४८॥

बरसत रंग की बहुधार हरसत सब के होय ।
परसत जब कुच प्रोय के धरसत तब जोय तोय ॥४९॥

चोवा के फोवा चलें उडें अबीरन थाल ।
झोलिन सों रोली चलें चले गुलाल रुमाल ॥५०॥

तिय पिचकारी कू गयो चुकै चतुर गोपाल ।
तब प्यारो चितवन पिचक भारे कियो बेहाल ॥५१॥

समर तबैं नंदलाल पुन गही पिचक कर जोर ।
तक मारी प्यारी बदन सु दंग रंग में बोर ॥५२॥

सखि घूँघट की ओट सौं गर चुकैं पिचकारी ।
तब प्यारो अति दीन ह्वै कहत बड़ि जु खीलारि ॥५३॥

गारी गावें परसपर नारी सारो छोर ।
बाँध कोउ निज बसन में कहत बाम यह मोर ॥५४॥

रंगि रंगीलो रंग सों रस्क तरंग के माय ।
रंग रंग मुख सों कहैं रंग हि रंग दिखाय ॥५५॥

तडकत चोलो तनो सें सरकत नबीन बंद ।
ढ़रकत श्रमकण बिंदु अरु परसत गोकुलचंद ॥५६॥

प्रीत रीत अति ही रही होली खेलन माँय ।
फागु दियो खिलार नें दियो वाल हरसाय ॥५७॥

ब्रह्मादिक हूँ नहिं लखो चखो न जो रस सेष ।
सो हरि व्रज वनितन कियो निजकर योषित वेष ॥५८॥

कृष्ण प्रिया नित रुचिर बन करत खेल खिलवार ।
नवल कुंज में जुगल छवि करत कलोल विहार ॥५९॥

लिना वनौता अति निपुन मोहन सोभन वेष ।
निरख निरख अरु हरष से गुण गण कहत विशेष ॥६०॥

वृंदावन खेलन चली अली छवीली आज ।
चंपकली सी झिलमिलि लियें सकल समाज ॥
एरी सखी निकसी है भांनु कुमारि ।
सवी सिंगार सम्हार कें व्रजचद सों खेल फागरि ॥

चलीं अली वतरात हाथ न पकर हाथ
मन मनोहर वात कौतुक गसीसी है ।
हसत हसास जात मृदु वतरात जात
कोमल सुरन गात मंजुल हसीसी है ।
सोभन मृदुल गात कांति विलसत जात
भूषन दिपात जात सोभा की सरसी है ।
होत ही प्रभात मात तात न से पूछ नित
जात सरसात प्रिय प्रेम में लसीसी है ॥१॥

सवैया—

तरुनी सब अंग सिंगार कीये रति रुप लीये निकसी घरतें ।
दृग चंचल कोरन में कल अंजन रेख लसें सरसें सरतें ।
तिन कूल में एक पड़ी लट आय सो सोभन यें उपमा करतें ।
मनो पन्नग बालक आन दुरचौ सरसीरुह में जननीं ड़रतें ।

अथ शिशिर के कवित्त—

सुंदर गुलाबी सीस महल बनो सुभल
विमल बनाती लगे बरदा चमक कें ।
चारु चारु चतुर चहूँ दिस बिछायो भायो
गिल गिली गिलम गलीचा सुदमक कें ।
सोभन धुकाये मृगमद औ अगर धूम
झूमें घूमें शिखीगण मोदतें लमक कें ।
लुक के रंगीले लाल शीशिर के सीत भीत
अंक लाय लाड़िली को अति ही झमक कें ॥१॥

शिशीर समागम को आगम सो जान प्यारी
सुंदर सदन साज विवि राज राजे हैं ।
मृगमद अगर धूप धूपित कराय भौन
पौन गौन कौन विधि रंचक न छाजे हैं ।
सोभन भनत अति कोमल गिलम मंजु
मखमल गलीचन देख शीत भाजे हैं ।
सरस समाजै बाजै मुरज मुचंग बीन
रीझत प्रवीन लखि मैंन रति लाजे हैं ॥२॥

वेर वेर ढ़ांके वड़े डर डर झांके तऊ
कड़ कड़ दांते वाज वाज जुरि जुरि जात ।
नेंक हात प्यारे तोपे थर थर कांपें प्यारे
ओढ़ि ओढ़ि साल भालहूँ तें लुरि लुरि जात ।
सोभन भनत भाग भाग आग आगे जाय
तापे लखि छार भार पुनि मुरि मुरि जात ।
शिशिर के सीत तें अनीति सी त्यों मान भीत
सेज पै पुनीत मीत दोऊ दुरि दुरि जात ॥३॥

मुद्रक—गौर हरि प्रेस, कुसुम सरोवर, राधाकुन्ड तथा भूमिका एवं आवरण पृष्ठ श्री प्रिन्टिंग प्रेस, मथुरा ।

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८
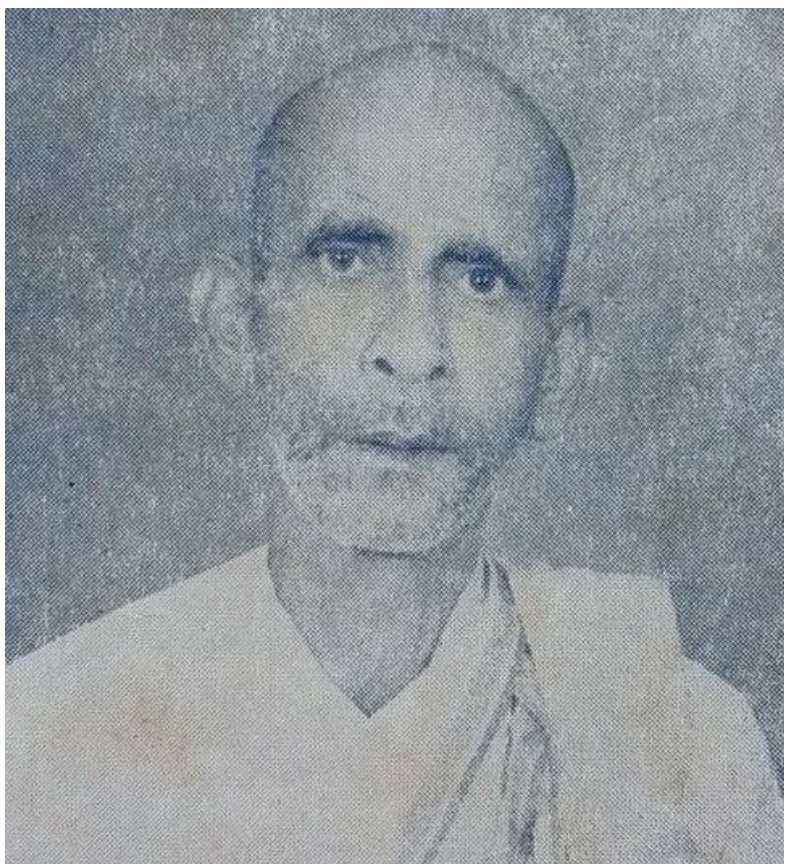
इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्